धरोहर

भाग- 7

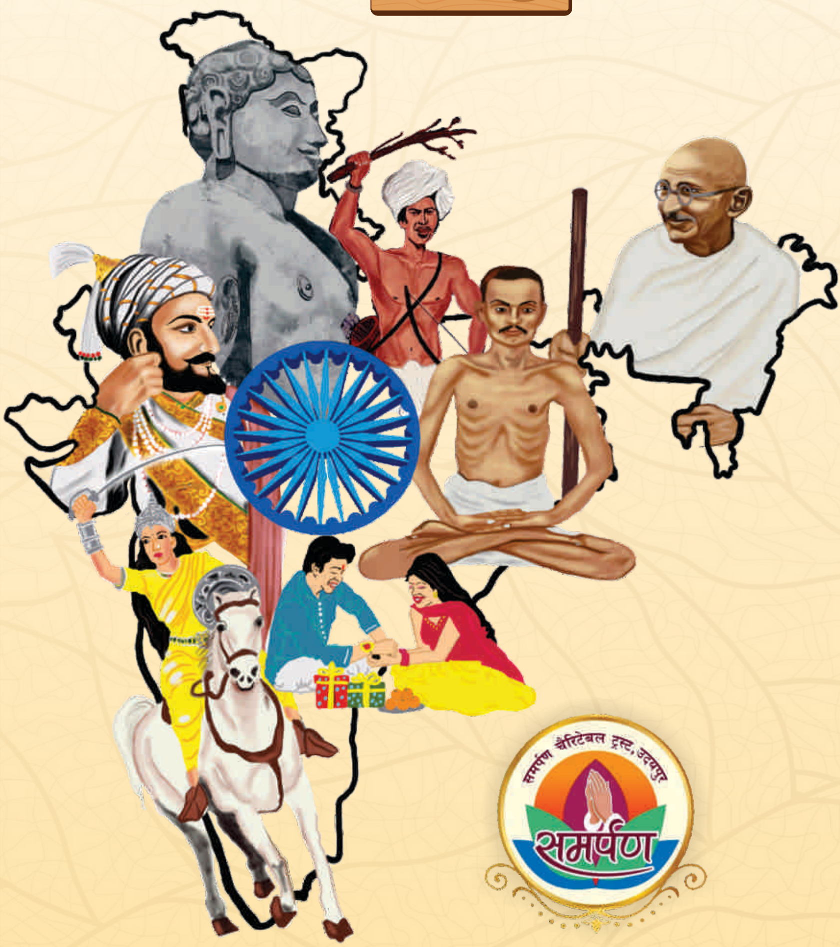

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

समर्पण

स्कूल जाते समय रखें सावधानियाँ

1. पानी की बोतल में ताजा पानी छानकर भरें और बोतल में लोंग या थोड़ी सी सौंफ डाल लें, जिससे आपका पानी 6 घंटे तक अनछना नहीं होगा।
2. स्कूल में अपने टिफिन का ही भोजन करें, हर किसी अपरिचित का भोजन न करें। हो सकता है कि उसके टिफिन में न खाने योग्य अभक्ष्य-अमर्यादित पदार्थ हों।
3. आप अच्छे और संस्कारित बच्चों को दोस्त बनायें जिससे आपकी सोच का और आपका विकास होगा।
4. स्कूल के गार्डन में अथवा रास्ते में लगे हुए पौधों अथवा फूलों को नुकसान न पहुँचायें, न ही उन्हें तोड़ें। यह हिंसा का पाप है।
5. स्कूल की किसी भी चीज को अपने अध्यापक से बिना पूछे न लायें और न ही किसी छात्र की कोई वस्तु को लायें।
6. विद्यालय में मन लगाकर पढ़ें। अध्यापक की प्रत्येक बात को ध्यान से सुनें।
7. विद्यालय से लौटकर अपने कपड़े, जूते-मोजे, टाई, आई कॉर्ड, स्कूल बैग सही स्थान पर रखें।
8. मोजे जूते से बाहर रखें। जूते के अंदर रखने से उनमें बदबू आने लगती है।
9. अपना होमवर्क उसी दिन पूरा करने का प्रयास करें ताकि स्कूल में मिलने वाले दण्ड से आप बच सकें।
10. अपनी पढ़ाई के बारे में तथा स्कूल में कोई भी खास बात हुई हो या कोई घटना हुई हो तो अपनी मम्मी को अवश्य बतायें।

सर्वोदय ग्रन्थमाला पुष्प-3

धरोहर

भाग- 7

(गौरवशाली नैतिक-अहिंसक मानव मूल्यों, पर्वों, तीर्थों तथा इतिहास की बोधक)

संकलन/संपादन

राजकुमार शास्त्री, उदयपुर

प्रकाशक

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ
[चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रम संवत् 2080 (नववर्ष प्रारंभ)
22 मार्च 2023]

प्राप्ति स्थान : 18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर,
यूनिवर्सिटी रोड, उदयपुर (राज.)
मो. 91-9414103492

मूल्य : 75/-

प्यारे बच्चो! अच्छी पुस्तकें ज्ञान प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन हैं, सच्ची मित्र हैं। पुस्तकों से गुण-दोष, अच्छे-बुरे का ज्ञान होता है, जिससे शान्तिमय जीवन का निर्माण होता है इसलिए पुस्तकों को खराब न करें, फाड़ें नहीं, अपमान न करें।

मुद्रक : देशना कम्प्यूटर्स
82, पॉल्टी फार्म, आगरा रोड, जयपुर
मो. 9928517346

पुस्तक के संबंध में...

वर्तमान समय में भौतिक संसाधनों की वृद्धि आश्चर्यजनक रूप से हो रही है, साथ ही शिक्षा-चिकित्सा-व्यवसाय इत्यादि क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय प्रगति हो रही है, जिससे सर्वत्र आर्थिक समृद्धि भी दिखाई दे रही है; फिर भी यदि गम्भीरता से देखा जाए तो जहाँ शिक्षा और अर्थ जगत में उत्साहवर्धक उन्नति हुई है वहीं मानवीय मूल्यों और नैतिकता में बहुत ही ह्रास हो रहा है। हम अपनी संस्कृति को भुलाते जा रहे हैं। विद्यार्थी कैसे भी अधिक से अधिक अंक प्राप्त करके, अच्छे पैकेज वाला 'जॉब' करके कैसे भी धन अर्जित कर उसे भोग विलास में लगाकर अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव कर रहे हैं।

हमारे देश की संस्कृति या विरासत अन्य-अन्य माध्यमों से छात्रों तक पहुँचाई जाती रही है फिर भी अनेक व्यक्तित्व, पर्व ऐसे हैं जिनके बारे में भारत देश की अधिकांश जनसंख्या अपरिचित है, ऐसे अनेक प्रेरक प्रसंग हैं, जो हमारे लिए दिशा बोध देते हैं इन सभी का ज्ञान कराने की भावना से हमने यह 'धरोहर' पुस्तक तैयार की है।

अध्यापकों से निवेदन है कि विश्व गुरु के रूप में प्रसिद्ध महान् भारत देश की नैतिक, अहिंसक, संस्कृति एवं गौरवशाली इतिहास की झलक दिखलाने वाली इस पुस्तक का उत्साहपूर्वक अध्यापन कर अपनी 'धरोहर' को बच्चों तक पहुँचाने में अपना सहयोग करें।

छात्रों से भी अनुरोध है कि जिन विषयों के अंक, अंक सूची में अंकित होते हैं, जिनके आधार से नौकरी मिलती है वे ही विषय काम के हैं - ऐसा विचार त्याग कर 'जो हमारे विचार और आचरण को प्रभावित करे, जो हमारे जीवन का निर्माण करे' - ऐसी पुस्तक को भी अपने जीवन में उत्साह पूर्वक अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

सुभाषितकार ने कहा है –

राष्ट्रं समाजतः सिद्ध्येत्, समाजो व्यक्तिभिस्तथा।

व्यक्तिश्चरित्रतः सिद्ध्येत्, चरित्रं तूच्चशिक्षया।।

राष्ट्र का निर्माण समाज से होता है, समाज का निर्माण व्यक्तियों से होता है, व्यक्ति का निर्माण चरित्र से होता है और चरित्र का निर्माण उच्च और श्रेष्ठ शिक्षा से होता है।

बालकों के चरित्र निर्माण की दिशा में यह पुस्तक एक छोटा-सा कदम है जो सही दिशा की ओर ले जाएगा। आपके जीवन को उत्साह व प्रसन्नता से परिपूर्ण करने के लिए यह पुस्तक आपके हाथों में है।

जिन लेखकों/कवियों की सामग्री पुस्तक में सम्मिलित की गई है उन सभी के प्रति हम आभारी हैं।

आशा है विद्यालय संचालकों/अध्यापकों और छात्रों के उत्साह/सहयोग से हमारा यह प्रयास सार्थक होगा।

डॉ. अरविन्द जैन
संयोजक

राजकुमार शास्त्री
संपादक

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृ.सं.
1.	प्रार्थना	7
2.	प्रेरक प्रसंग	10
	■ हिंसक बना अहिंसक	10
	■ साँच को आँच नहीं	11
	■ गाँधीजी का दर्द	12
	■ निस्पृहता	13
3.	हमारे गौरवशाली महापुरुष	15
	■ अपना घर	15
	■ श्रीमद् राजचन्द्र एवं महात्मा गाँधी	15
4.	जरा याद इन्हें भी कर लो	19
	■ पण्डित अर्जुनलाल सेठी	19
	■ महान वीरांगना – क्रांतिकारी रानी अवंतीबाई लोधी	21
5.	एकांकी : पेपर मार्ट	23
6.	हमारे पर्व : दीपावली	27
7.	हमारे तीर्थ : सम्मेद शिखर	30
8.	कविताएँ	32
	■ गंदी चाट कभी न खाओ	32
	■ पानी सदा स्वच्छ पीना	32
	■ योगाभ्यास करो हर दिन	33
	■ बिस्तर को फटकारो रोज	33
	■ बच्चे लगते वेद पुराण	33
	■ शिक्षा	34
	■ जागो–जागो मेरे भाई	35
9.	सदाचार	37
	■ सत्यं वद	37
	■ अनर्थदण्ड	38
	■ पाव–ब्रेड : कितना अभक्ष्य है? वो जानिये	41
10.	जीवन निहारें–जीवन निखारें	43
	■ उत्तम विचार–सफलता का आधार	43
11.	शिक्षाप्रद कहानियाँ	52
	■ व्यसन की आग सब कर दे राख	52
	■ परिणामों का फल	54
	■ चार चौकीदार	56
12.	सुभाषित– सत्संगति	59

जिओ और जीने दो

मैं झंझट-झगड़ों की बात नहीं करता,
अगड़ों या पिछड़ों की बात नहीं करता।
मानव तो मानव है, पूर्ण इकाई है,
मानव की टुकड़ों में बात नहीं करता।

मैं अनीति-अन्याय नहीं चलने दूँगा,
शोषण का व्यवसाय नहीं चलने दूँगा।
सम्पन्नों की स्वार्थ-सिद्धि की ज्वाला में,
नहीं विपन्नों को कदापि जलने दूँगा।।

मैं लड़ने-भिड़ने की बात नहीं करता,
बिना बात अड़ने की बात नहीं करता।
जो जिसका हक है, उसको देना होगा,
पचड़ों में पड़ने की बात नहीं करता।

मानवता को जो भी सुर-संगीत बने,
चले हमारे साथ हमारा मीत बने।
दानवता का नग्न-नृत्य हो चुका बहुत,
कर समाप्त उसको मानव की जीत बने।

मैं हिंसा करने की बात नहीं करता,
'मारो या मरने' की बात नहीं करता।
'जिओ और जीने दो' का मैं हामी हूँ।
जुल्मों से डरने की बात नहीं करता।

1 प्रार्थना

अन्धकार में भटक रहा हूँ, दिखती मुझको राह नहीं है,
दिव्य-ज्योति से ज्योतित कर दो, मुझको केवल चाह यही है।
निकल सकूँ मैं इस संकट से, भगवन्! मुझको ऐसा वर दो।
मेरा उर आलोकित कर दो ॥ 1 ॥

छल-छद्मों के बीच ठगों सा, मुँह बाये पाखण्ड खड़ा है,
रूढ़ि अन्धविश्वासों ने मिल मानव का मानस जकड़ा है।
इनसे बचकर रहूँ सदा मैं, ऐसा मुझ में साहस भर दो।
मेरा उर आलोकित कर दो ॥2 ॥

दर्शन-ज्ञान स्वरूपी मैंने अपना रूप भुलाया,
अपना स्वर्णिम सुखमय जीवन, अब तक यों ही व्यर्थ गँवाया।
नीरस को अति सरस बनाऊँ, ऐसा मुझको शुभ अवसर दो।
मेरा उर आलोकित कर दो ॥ 3 ॥

हूँ स्वतंत्र मैं नाम मात्र का, उच्छृंखलता मुझ में व्यापी,
आदर्शों से दूर हटा हूँ, बढ़ी हुई है आपा–धापी।
इसको जड़ से मिटा सकूँ मैं, महाशक्ति वह मुझमें भर दो।
मेरा उर आलोकित कर दो ॥4 ॥

सत्य–अहिंसा पाठ भुलाकर, जन–जन की है पीर–बढ़ाई,
आत्म–प्रशंसा, पर–निन्दा में, समझी मैंने पूर्ण भलाई।
किन्तु द्वन्द्व है अन्तस्तल में, उसे मिटा अमृतरस भर दो ॥
मेरा उर आलोकित कर दो ॥5 ॥

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – कविता के भाव पक्ष पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. 'उर आलोकित कर दो' से कवि का क्या आशय है?
2. मानव को किसने जकड़ रखा है?
3. कवि ने किसे भुलाया है?
4. कवि किस महाशक्ति से भर जाना चाहता है?
5. कवि के अंतस्तल में किस तरह का द्वन्द्व है?

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 2 – कवि ने अपने हृदय में छाए अंधकार रूप दुर्गुणों को कहकर उन्हें दूर करने हेतु ईश्वर के सामने आह्वान किया है। आप भी अपने दुर्गुणों पर विचार करके सूची बनाइये।

प्रश्न 3 – ऐसी कौन सी अच्छी आदतें हैं जो प्रत्येक मानव में होना चाहिए? इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 4 – 'सत्य वह है जो आत्मविश्वास को प्रबल करता है।' महात्मा गाँधी या अन्य किसी महापुरुष के जीवन के किसी प्रसंग को खोज कर पढ़िए और बालसभा में सुनाइए।

रचना

प्रश्न 5 – झूठ का फल विषय पर एक छोटी कविता या कहानी लिखो।

यह भी जाने –

1. सत्य पर दृढ़ता से राजा हरिश्चंद्र प्रसिद्ध हुए।
2. छल-छद्म करने से मन सदा विचलित रहता है।
3. दर्शन और ज्ञान ही जीव का स्वभाव है।
4. आत्म-प्रशंसा, दूसरों की निंदा करने से अपनी ही हानि होती है।
5. जीवन जीने का उत्तम तरीका है – आदर्श जीवन।

2 प्रेरक प्रसंग

हिंसक बना अहिंसक

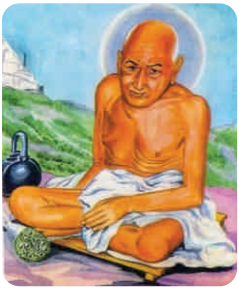

गणेशप्रसादजी वर्णी बरुआसागर में मूलचन्द्र जी के मकान में रहते थे। पास में कहार लोगों का मोहल्ला था। एक दिन रात्रि को ओलों की वर्षा हुई, इतनी विकट कि मकानों के खप्पर फूट गये। हम लोग रजाई आदि को ओढ़कर किसी तरह ओलों के कष्ट से बचे। पड़ोस में जो कहार थे, वे सब हे भगवान – ''हे भगवान कहकर अपनी प्रार्थना कर रहे थे।'' वे कह रहे थे कि – ''हे भगवान्! इस कष्ट से रक्षा कीजिए, आपत्ति काल में आपके सिवाय कोई शक्ति नहीं, जो हमें कष्ट से बचा सके।''

उनमें एक दस वर्ष की लड़की भी थी। वह अपने माता-पिता से कहती है कि ''तुम लोग व्यर्थ ही हे भगवान! हे भगवान! रट रहे हो, यदि कोई भगवान होता तो इस आपत्ति-काल में हमारी रक्षा न करता? यदि तुम इन सब आपत्तियों से बचना चाहते हो तो एक काम करो। देखो तुम प्रतिदिन सैकड़ों मछलियों को मारकर अपनी आजीविका करते हो। जैसी हमारी जान, वैसी ही अन्य जीवों की भी है। यदि तुम्हें कोई सुई चुभा देता है तो कितना दुख होता है। जब तुम मछली की जान लेते हो, तब उसे जो दुख होता है, वही जानती होगी अतः मैं यही भिक्षा माँगती हूँ कि चाहे भिक्षा से पेट भर लो, परन्तु मछली मारकर पेट मत भरो।''

लड़की की ज्ञान भरी बातें सुनकर पिता एकदम चुप रह गया और कुछ देर बाद उससे पूछता है कि ''बेटी! तुझे इतना ज्ञान कहाँ से आया?''

वह बोली कि ''मैं पढ़ी-लिखी तो हूँ नहीं, परन्तु बाईजी के पास जो पण्डितजी हैं, वे प्रतिदिन शास्त्र बाँचते हैं। एक दिन बाँचते समय उन्होंने बहुत-सी बातें कहीं। अपने-अपने पुण्य-पाप के आधीन सब प्राणी हैं। यह बात आज मुझे और भी जँच गई। कोई बचाने वाला होता तो इस आपत्ति से न बचाता?''

पिता ने पुत्री की बातों का बहुत आदर किया और कहा कि "बेटी ! हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं और जो यह मछलियों के पकड़ने का जाल है, उसे मैं अभी तुम्हारे ही सामने नष्ट करता हूँ।"

इस तरह उसने बातचीत के बाद उस जाल को जला दिया और स्त्री-पुरुष ने प्रतिज्ञा की कि अबआजन्म हिंसा न करेंगे। यह कथा हम और बाईजी सुन रहे थे। बहुत ही प्रसन्नता हुई। इसके बाद ओला पड़ना बन्द हुआ। प्रात:काल जब हम मन्दिरजी पहुँचे, तब आठ बजे वे तीनों जीव आये और उत्साह से कहने लगे कि "हम आज से हिंसा न करेंगे।"

मैंने प्रश्न किया - "क्यों?" उत्तर में उसने रात्रि की पूरी कहानी सुनाई, जिसे सुनकर चित्त में अत्यन्त हर्ष हुआ।

शिक्षा - कोई भी प्राणी दुखी होना तथा मरना नहीं चाहता; अत: किसी भी प्राणी को मारने-सताने से बचना चाहिए। हिंसा महापाप है।

साँच को आँच नहीं

किसी नगर में एक जुलाहा रहता था। वह बहुत बढ़िया कम्बल तैयार करता था। कत्तिनों से अच्छी ऊन खरीदता और भक्ति के गीत गाते हुए आनन्द से कम्बल बुनता। वह सच्चा था, इसलिए उसका धन्धा भी सच्चा था। रत्तीभर भी कहीं खोट-कसर नहीं थी।

एक बार उसने एक साहूकार को दो कम्बल दिये। साहूकार ने दो दिन बाद उनका पैसा ले जाने को कहा।

साहूकार दिखाने को तो धरम-करम करता था, माथे पर तिलक लगाता था, लेकिन मन उसका मैला था। अपना रोजगार छल-कपट से चलाता था।

दो दिन बाद जब जुलाहा अपना पैसा लेने आया तो साहूकार ने कहा, "मेरे यहाँ आग लग गई और उसमें दोनों कम्बल जल गये। अब मैं पैसा क्यों दूँ?"

जुलाहा बोला, ''यह हो नहीं सकता। मेरा धन्धा सच्चाई पर चलता है और सच में कभी आग नहीं लग सकती।''

उसके कन्धे पर एक कम्बल पड़ा था। उसे सामने करते हुए उसने कहा, ''यह लो ! लगाओ इसमें आग।''

साहूकार बोला – ''मेरे यहाँ कम्बलों के पास मिट्टी का तेल रक्खा था। कम्बल उसमें भीग गये थे। इससे जल गये।''

जुलाहे ने कहा, ''तो इसे भी मिट्टी के तेल में भिगो लो।''

काफी लोग वहाँ इकट्ठा हो गये थे। सबके सामने कम्बल को मिट्टी के तेल में भिगोकर आग लगा दी गई।

लोगों ने देखा कि तेल जल गया; लेकिन कम्बल जैसे-का-तैसा बना रहा।

जुलाहे ने कहा, ''याद रखो, साँच को आँच नहीं।''

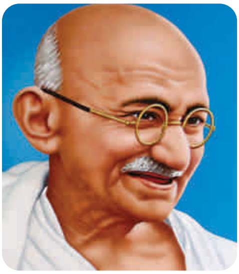

गाँधीजी का दर्द

गाँधीजी का जन्म-दिन बड़ी सादगी के साथ मनाया जाता था। एक बार सेवाग्राम में जब उनका जन्मदिन मनाया गया तो आश्रम के भाई-बहिनों के अलावा इधर-उधर के भी काफी लोग जमा हो गये।

गाँधीजी समय पर प्रार्थना-सभा में आये तो देखते क्या हैं, उनके सामने घी का दिया जल रहा है। बात नई थी। गाँधीजी उस ओर कुछ क्षण देखते रहे। उसके बाद प्रार्थना शुरू हो गई।

प्रार्थना समाप्त होने पर गाँधीजी का प्रवचन आरम्भ हुआ। सब लोग शान्त होकर उनकी ओर देखने लगे। गाँधीजी ने बड़े गम्भीर स्वर में पूछा, ''यह दिया कौन लाया है?''

पास बैठी बा ने कहा, ''मैं लाई हूँ।''

गाँधीजी ने फिर पूछा, ''कहाँ से लाई हो?''

''गाँव से'', बा बोलीं, ''आज आपकी वर्षगाँठ है न!''

गाँधीजी ने गहरी व्यथा के साथ कहा, ''आज अगर कोई सबसे बुरा काम हुआ है तो यह कि बा ने घी का दिया जलाया। आज मेरी वर्षगाँठ है,

इसलिए ऐसा किया गया है। आसपास के गाँवों में लोग कैसे रहते और जीते हैं, यह मैं रोज देखता हूँ। उन बेचारों को ज्वार–बाजरे की सूखी रोटी पर चुपड़ने के लिए तेल तक नहीं मिलता और आज यहाँ मेरे आश्रम में घी का दिया जल रहा है। बेचारे गरीब किसानों को जो चीज नसीब न हो, उसे हम इस तरह कैसे बरबाद कर सकते हैं?''

कहते–कहते उनका दर्द इतना उभरा कि उनकी आँखें गीली हो आईं। उनकी वे गीली आँखें आज भी सूखी नहीं हैं और उनका वह दर्द तो आज और भी बढ़ गया है।

निस्पृहता

हिन्दी साहित्य की प्रथम आत्मकथा अर्द्धकथानक के लेखक और नाटक समयसार के रचनाकार पण्डित कविवर बनारसीदासजी रात्रि में सो रहे थे। घर में सामान से भरी हुई बोरी रखी थीं। रात में चार चोर भाई आये और एक दूसरे के सहयोग से बोरियाँ उठवाईं और तीन चोर बोरियाँ ले गये। चौथे चोर से अकेले बोरी उठाते नहीं बन रही थी। उस समय पण्डितजी जाग रहे थे। पण्डितजी उठे और चौथे चोर के लिए बोरी उठाकर उसके कंधे पर रखवा दी और फिर जाकर सो गये। तीन चोरों ने घर जाकर बोरी रख दीं। चौथा चोर कुछ देर से आया तो माँ ने उससे देर होने का कारण पूछा और उसने बताया कि ''बोरी बहुत भारी थीं तो मैं अपने भाइयों को बोरी उठाने में सहयोग कर रहा था।'' माँ ने पूछा – ''तो तुमने अकेले बोरी कैसे उठाई?'' चौथा बोला – ''पता नहीं, पर किसी ने मुझे सहयोग किया था। अँधेरा बहुत था, मुझे लगा कि मेरे किसी भाई ने सहयोग किया होगा। पर तीनों भाई तो पहले ही यहाँ आ गये तो मुझे किसने सहयोग किया?''

तब माँ ने कहा कि ''मैं समझ गई। तुम लोग आज पण्डित बनारसीदासजी के यहाँ चोरी करके आये हो और उन्हीं ने इसे सहयोग किया होगा। सुबह जाकर पण्डितजी का पूरा सामान वापिस करके आना। इतने सज्जन पुरुष के यहाँ चोरी कैसे की? और सुबह होते ही चारों चोर पण्डितजी का सारा सामान वापिस कर आये और अपने अपराध के लिए क्षमा माँगी।''

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – कहानी की विषय वस्तु पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. मछुआरे ने हिंसा करना क्यों छोड़ दिया?
2. 'साँच को आँच' का क्या आशय है?
3. गाँधीजी को दर्द क्यों हुआ?
4. चोरों की गठरी किसने उठवाई और क्यों?
5. पंडित बनारसीदास कौन थे?

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 2 – हिंसा, असत्य और चोरी की आदत बुरी क्यों है? इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 3 – अपनी खोज करो कि कहीं आप भी इन दुर्गुणों का शिकार तो नहीं हो रहे हो? प्रतिदिन अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 4 – किसी महापुरुष के जीवन के ऐसे प्रसंगों को खोज कर पढ़िए जिनके प्रभाव से किसी की गंदी आदतों में सुधार हुआ हो और बालसभा में सुनाइए।

रचना

प्रश्न 5 – चोरी का परिणाम विषय पर एक कविता या निबंध लिखो।

यह भी जाने –

1. अत्यधिक वस्तुओं का संग्रह करना भी बुरा है।
2. जीवों के प्रति करुणा रखना उत्तम गुण है।
3. आदर्श वही बन सकता है जो सदाचार का पालन करता है।
4. अपनी आदतों को हम स्वयं सुधार सकते हैं।
5. भाग्य से अधिक और समय के पहले कुछ नहीं होता।

3 हमारे गौरवशाली महापुरुष

अपना घर

जैन कवि पण्डित भूधरदासजी एक बार आत्मध्यान कर रहे थे, उसी समय एक चूहा उनके पैर के फोड़े को काटता रहा, जिसके कारण फोड़े में से खून निकलने लगा। सामायिक (आत्मध्यान) के बाद जब उनके घर के सदस्यों ने देखा तो उन्हें बड़ा दु:ख हुआ। अब उस फोड़े पर बार-बार मक्खी बैठ रही थी तो पण्डितजी उस मक्खी को बार-बार उड़ा रहे थे। यह देख उनके भाई ने कहा - "जब चूहे ने लगातार एक घण्टे तक काटकर फोड़े में खून बहा दिया तब आपने उसे भगाया नहीं, अब छोटी सी मक्खी को बार-बार उड़ा रहे हैं।" पण्डितजी ने उत्तर दिया - "उस समय मैं अकेले अपने घर (ध्यान) में था, वहाँ किसी की चिंता नहीं रहती। यहाँ अब शरीर के साथ हूँ, इसलिए उसकी ओर ध्यान चला जाता है।"

श्रीमद् राजचन्द एवं महात्मा गाँधी

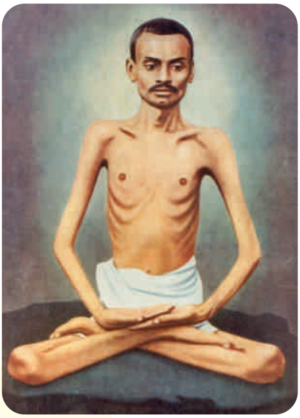

श्रीमद् राजचन्द्र सौराष्ट्र के एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक संत थे। उन्होंने अपनी अल्प आयु में ही अध्यात्म का स्पर्श किया और अपनी आध्यात्मिक रचनाओं के माध्यम से स्वाध्यायी समाज को अनुपम भेंट दी। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी श्रीमद् राजचन्द्रजी से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने अपने लेख में श्रीमद् के बारे में विस्तृत उल्लेख किया है।

महात्मा गाँधी के शब्दों में –

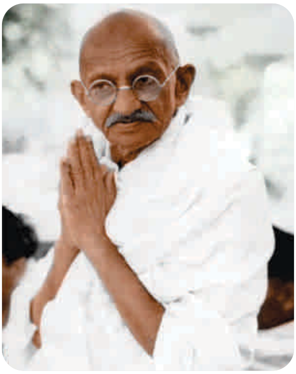

प्रथम मुलाकात और उनका प्रभाव – राजचन्द्र भाई से मेरी मुलाकात 1891 में जब मैं विदेश से मुम्बई वापिस आया तब डॉक्टर, बैरिस्टर और रंगून के प्रख्यात जवेरी प्राणजीवन दास मेहता के घर पर हुई। तब श्रीमद्जी वहीं पर थे और डॉक्टर साहब ने राजचन्द्र का परिचय कवि के रूप में कराया और बताया कि राजचन्द्रजी हमारे व्यापार में सहयोगी होने के साथ ज्ञानी और शतावधानी (100 वस्तुओं के नाम एक बार सुनने के बाद अपनी स्मृति के बल से उन्हें ज्यों के त्यों उसी क्रम में दोहराना) हैं। मुझे उस समय अपनी विदेशी शिक्षा का बहुत अभिमान था। ऐसा लगता था कि मैं आकाश से उतरा हूँ। डॉक्टर साहब के अनुरोध पर मैंने उनकी परीक्षा लेने के लिए अलग-अलग भाषाओं के कठिन शब्द पेपर पर लिख लिये और उन शब्दों को श्रीमद् के सामने सुनाया। पर श्रीमद् ने उन अनेक भाषाओं के शब्दों को बिना रुके ही ज्यों का त्यों सुना दिया। उस समय में आश्चर्यचकित हुआ और मेरा अभिमान टूट गया।

स्मरण शक्ति – श्रीमद् को अंग्रेजी का ज्ञान बिल्कुल नहीं था और गुजराती का भी थोड़ा ही अध्ययन किया था; परन्तु उनकी स्मरण शक्ति अद्‌भुत थी। इतनी शक्ति और ज्ञान होने के बाद भी श्रीमद् को जरा भी मान नहीं था। शास्त्र का ज्ञान तो बहुत व्यक्तियों को होता है, परन्तु संस्कार न हों तो वो वह अभिमानी बन जाता है। श्रीमद्जी संस्कारी ज्ञानी थे।

सदा सावधान – श्रीमद्जी हीरे-जवाहरात का व्यापार करते थे। हजारों का व्यापार करना, हीरे की परख करना, व्यापार की समस्यायें

सुलझाना और इसके बाद भी समय मिलते ही दुकान पर ही स्वाध्याय प्रारंभ कर देना उनकी विशेषता थी। लाखों के व्यापार करने के तुरन्त बाद आत्मा की सूक्ष्म बातें करने की विशेषता श्रीमद् में थी।

श्रीमद् से मिलने के बाद मैं अनेकों धर्म आचार्यों के सम्पर्क में आया परन्तु जो बात श्रीमद् में थी वह किसी में नहीं मिली। मैं अपनी आध्यात्मिक कठिनाइयों के समय उनकी सहायता लेता था।

गहरा प्रभाव – मेरे ऊपर तीन महापुरुषों ने गहरा प्रभाव डाला है, अंग्रेजी लेखक टॉलस्टाय, रस्किन और राजचन्दभाई। मैंने सत्य धर्म को जानने के लिए अनेक धर्म ग्रन्थों का अध्ययन किया; परन्तु जो सत्यता मुझे श्रीमद्जी के द्वारा बताये धर्म में दिखी वह कहीं नहीं दिखी। श्रीमद्जी से मेरा निकट का सम्बन्ध था। मेरे जीवन पर श्रीमद् का कितना प्रभाव है मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता। पूरे भारत में श्रीमद् के बराबर का कोई संत नहीं है। उनका ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, अध्यात्म, जीवन सब अद्भुत है।

मैंने अपने जीवन में बहुतों से बहुत कुछ ग्रहण किया है, परन्तु मैंने अपने जीवन में सबसे ज्यादा किसी से ग्रहण किया है तो वह हैं कवि श्रीमद् राजचन्द्रजी।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – संस्मरण की विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. भूधरदासजी ने पैर को काटने वाले चूहों को क्यों नहीं हटाया?
2. राजचन्द्रजी कौन थे? उन्हें शतावधानी क्यों कहा गया?
3. राजचन्द्रजी किस बात में सदा सावधान रहते थे?
4. राजचन्द्रजी से कौन प्रभावित थे? क्यों थे?
5. शतावधानी कैसे बन सकते हैं?

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 2 – अध्ययन करना अच्छा क्यों है? इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 3 – अपनी खोज करो कि आप में इनमें से कौन से गुण हैं? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 4 – आपके जीवन पर किसका प्रभाव है? आप किसे आदर्श मानते हैं? लिखिए।

रचना

प्रश्न 5 – राजचन्द्रजी का चित्र शब्दों में बना सकते हैं। शिक्षक की सहायता से लिखिए।

यह भी जाने –

श्रीमद् की साहित्यिक प्रतिभा के दर्शन भी बचपन में ही होने लगी थी। आठ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने कविता लिखनी शुरू कर दी थी। 11 वर्ष के होते-होते उनके लेख, निबंध, कविता आदि बुद्धि प्रकाश नामक पत्र में छपने लगे थे। कई निबंध प्रतियोगिताओं में उन्हें इनाम भी मिले। मोक्षमाला नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना उन्होंने साढ़े-सोलह वर्ष की उम्र में ही की थी।

4 जरा याद इन्हें भी कर लो...

पण्डित अर्जुनलाल सेठी

क्रान्तिकारी देशभक्त और समाजसेवी विद्वान, पंडित अर्जुनलाल सेठी का जन्म 9 सितंबर 1880 ई. को श्री जवाहरलाल सेठी के यहाँ जयपुर (राज.) में हुआ। उनके पितामह श्री भवानीदास सेठी की अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के शहजादों के साथ अच्छी मित्रता थी। सेठीजी ने बाल्यावस्था से ही लोकसेवा के कार्य, सभाओं में व्याख्यान, नाटकों में भाग, जैन प्रदीप (पत्रिका) का प्रकाशन, विद्या प्रचारिणी की स्थापना आदि प्रारम्भ कर दिये। संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं के साथ उन्होंने जैनधर्म की शिक्षा भी प्राप्त की तथा 1902 में उन्होंने बी.ए. पास कर ली।

1904 में सेठीजी दिगम्बर जैन महासभा द्वारा संचालित मथुरा विद्यालय में शिक्षक हो गए तथा 1907 में स्वयं जयपुर में जैन विद्यालय की स्थापना की, जो कि वास्तव में क्रान्तिकारियों की टकसाल थी। 1905-1912 तक के सभी क्रान्तिकारी आंदोलनों में सेठीजी ने भाग लिया। राजनैतिक चिंतन में तल्लीन होने के कारण उन्हें मुश्किल से 1-2 घंटे नींद आती थी।

1914 में सेठीजी को जयपुर में नजरबंद कर दिया तथा बाद में मद्रास प्रेसीडेन्सी के बैलूर जेल में भेज दिया, जहाँ जिनदर्शन न होने पर 70 दिन (एक मतानुसार 56 दिन) निराहार रहे, अंत में सरकार को झुकना पड़ा और स्वतंत्रता सेनानी महात्मा भगवानदीन ने जेल में जिनप्रतिमा विराजमान करवायी तब उनका उपवास समाप्त हुआ।

1916-17 में अम्बाला में जैन वेदी प्रतिष्ठा में बाबू अजितप्रकाश लखनऊ वालों ने आर्थिक सहायतार्थ सेठीजी के छपे चित्र बेचे, जिससे सेठी को मुक्त करो आंदोलन प्रबल हुआ और सरकार उन्हें छोड़ने को तैयार हुई, किन्तु सेठीजी ने सशर्त रिहा होना ठुकरा दिया।

1920 में छह वर्ष की जेल के बाद जब सेठीजी पूना होते हुए बम्बई जा रहे थे, तब स्टेशन पर बाल गंगाधर तिलक ने उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। 1921 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रसिद्ध उदाहरण प्रस्तुत किया।

एक बार प्रसिद्ध क्रान्तिकारी चंद्रशेखर आजाद को अजमेर में सेठीजी ने एक गुप्त स्थान पर ठहराया हुआ था। उनके गिरफ्तार होने का संवाद पढ़कर सेठीजी को लगा मानो वह उनके लिए मृत्यु संदेश था, उनके यहाँ से आजाद के गिरफ्तार हो जाने का अर्थ उनकी नैतिक मृत्यु थी। अतः वे समाचार पढ़कर छद्म रूप धारण कर अजमेर पहुँचे, जहाँ पता चला कि पुलिस धोखे से किसी और को गिरफ्तार कर लाई है।

5 जुलाई 1934 को स्वयं महात्मा गाँधी अजमेर में सेठीजी के घर गए। कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में सेठीजी के नेतृत्व में लोग सत्याग्रह पर बैठ गए। सेठीजी को लाठियों से मारा गया वे घायल हो गए तब उन्हें देखने महात्मा गाँधी, मोतीलाल नेहरु, लाल लाजपतराय, पंडित जवाहरलाल नेहरु, सरोजिनी नायडू आदि निवास पर पहुँचे, गाँधीजी ने दु:खी होते हुए प्रायश्चित्त स्वरूप उपवास करना चाहा, परन्तु सेठीजी के समझाने पर उपवास का संकल्प त्यागते हुए गांधीजी ने कहा आप ‘धर्म शास्त्र के ज्ञान में मेरे गुरु तुल्य हैं।’

सेठीजी दारिद्र्यव्रती थे। अन्य नेताओं की तरह वे सुख-चैन से नहीं रहते थे, उनके पास जो कुछ भी आता था, वह देश की यज्ञ सेवा के लिए न्यौछावर कर देते थे। फलतः सेठीजी राजनैतिक क्षेत्र में ही पीड़ित नहीं रहे, वे पारिवारिक भरण-पोषण की चिंता में भी जीवन की अंतिम श्वाँस तक गलते रहे। जीवन के अंतिम समय में जब कहीं आश्रय नहीं मिला तो 30 रुपए मासिक पर अजमेर में मुस्लिम बच्चों को पढ़ाने के लिए मजबूर हो गए।

1937-40 के आसपास जब सेठीजी बंदी बनाकर रेल द्वारा ले जाए जाने लगे तो जनता इंजन के आगे लेट गई। सेठीजी के राजनैतिक जीवन को समाप्त करने के लिए कई दांवपेच खेले गए। 22 दिसम्बर 1941 को उनका निधन हो गया।

महान वीरांगना – क्रांतिकारी रानी अवंतीबाई लोधी

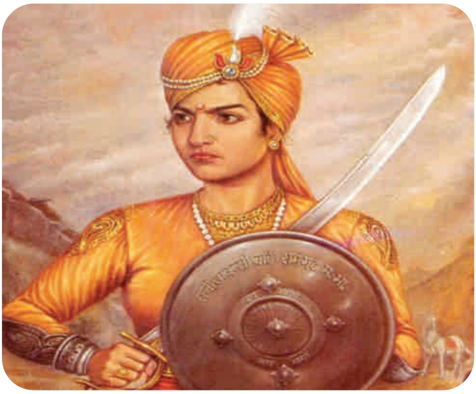

रानी अवन्तीबाई लोधी भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली प्रथम महिला शहीद वीरांगना थीं। 1857 की क्रांति में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई रेवांचल में मुक्ति आंदोलन की सूत्रधार थी। 1857 के मुक्ति आंदोलन में इस राज्य की अहम भूमिका थी, जिससे भारत के इतिहास में एक नई क्रांति आई।

रानी अवन्तीबाई : (16 अगस्त 1831–20 मार्च 1858); **जन्मस्थल :** ग्राम मनकेड़ी, जिला सिवनी, मध्य प्रदेश; **मृत्युस्थल :** देवहारगढ़, मध्य प्रदेश; **आन्दोलन :** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम।

1817 से 1851 तक रामगढ़ राज्य के शासक लक्ष्मण सिंह थे। उनके निधन के बाद विक्रमाजीत सिंह ने राजगद्दी संभाली। उनका विवाह बाल्यावस्था में ही मनकेहणी के जमींदार राव जुझार सिंह की कन्या अवंतीबाई से हुआ। विक्रमाजीत सिंह बचपन से ही वीतरागी प्रवृत्ति के थे अत: राज्य संचालन का काम उनकी पत्नी रानी अवंतीबाई ही करती रहीं उनके दो पुत्र हुए – अमान सिंह और शेर सिंह। अंग्रेजों ने तब तक भारत के अनेक भागों में अपने पैर जमा लिए थे जिनको उखाड़ने के लिए रानी अवंतीबाई ने क्रांति की शुरुआत की और भारत में पहली महिला क्रांतिकारी रामगढ़ की रानी अवंतीबाई ने अंग्रेजों के विरुद्ध ऐतिहासिक निर्णायक युद्ध किया जो भारत की आजादी में बहुत बड़ा योगदान है जिससे रामगढ़ की रानी अवंतीबाई का नाम पूरे भारत में **अमर शहीद वीरांगना रानी अवंतीबाई** के नाम विख्यात से है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. मद्रास प्रेसिडेंसी के बैलूर जेल में सेठी जी ने 70 दिन उपवास क्यों किया?
2. रेवांचल में मुक्ति आंदोलन की सूत्रधार कौन थी? परिचय लिखिए।

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 2 – देश भक्ति और दृढ़ संकल्प इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 3 – सोचिए कि यदि देशभक्त आजादी का संग्राम लड़ते हुए भी नियम के पक्के न होते तो क्या होता? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 4 – उपवास विषय पर एक निबंध लिखिए?

रचना

प्रश्न 5 – आजादी के दीवाने – इस शीर्षक से किसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का परिचय लिखिए।

यह भी जाने –

1. 1757 से लेकर 1947 तक अंग्रेजों का गुलाम रहा भारत –

भारत में अंग्रेजों की हुकूमत साल 1858 में शुरू हुई और 1947 तक चली। इससे पहले, 1757 से लेकर 1857 तक भारत पर ब्रिटेन की ईस्ट इंडिया कंपनी का कंट्रोल था। देश के वीर स्वतंत्रता सेनानियों के साहस और बलिदान के आगे आखिरकार अंग्रेजों ने घुटने टेक दिए और करीब 200 साल तक अंग्रेजों की गुलामी करने के बाद भारत को 15 अगस्त, 1947 के दिन आजादी मिली।

2. सिंधु नदी के नाम पर रखा गया हमारे देश का नाम –

हमारे देश का नाम सिंधु नदी से लिया गया था। सिंधु नदी, महान सिंधु घाटी सभ्यता की गवाह है। भारत को 15 अगस्त, 1947 की आधी रात को स्वतंत्रता मिली थी। आपको जानकर हैरानी होगी कि कोरिया, कांगो, बहरीन और लिकटेंस्टीन भी 15 अगस्त को ही अपना स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं।

5 एकांकी : पेपर मार्ट

(पवन नामक व्यक्ति अखबार की रद्दी बेचने के लिए महावीर पेपर मार्ट की दुकान पर जाता है और भाव पूछता है।)

पवन – (हाथ में पुराने अखबार हैं) अखबार क्या भाव लोगे?

सेठ – 6 रुपये किलो।

पवन – 7 रुपये किलो लोगे क्या?

सेठ – आगे जाओ! वहाँ भाव पूछना, फिर मुझे देना।

पवन – ठीक है! पूछ कर पता करता हूँ। (पवन दूसरी दुकान जैन पेपर मार्ट पर गया।)

पवन – अखबार क्या भाव लोगे?

जैन – 5 रुपये किलो।

पवन – अरे, अभी मैंने एक दुकान पर पूछा तो 6 रुपये किलो कहा और आप 5 रुपये कह रहे हो?

जैन – ऐसा है भाई! जो 6 रुपये किलो में ले उसे दे दो, पर आप अखबार एक बार मेरे यहाँ से तुलवा लो। पैसे देख लो, फिर 6 रुपये वाले के पास वापिस जाना।

पवन – ठीक है, वजन करो।

जैन – (अखबार तौलते हुए) 10 किलो हैं, 50 रुपए हुए। अब आपकी इच्छा हो तो दो अथवा मत दो।

पवन – आप वापस दीजिए। 6 रुपये किलो के भाव से 60 रुपये बनेंगे। (पवन अखबार लेकर वापस पहले वाली दुकान पर जाता है।)

पवन – सेठजी, ये लो अखबार।

सेठ – (वजन करता है) 7 किलो हैं।42 रुपए हुए।

पवन – अरे सेठजी! ये कैसा मायाचार (छल-कपट अर्थात् मन में कुछ, वचन में कुछ और क्रिया कुछ की कुछ) है? जैन पेपर मार्ट वाले सेठ 10 किलो वजन कह रहे हैं और 50 रुपये दे रहे हैं। पाँच के भाव से। आप 6 का भाव कहते हो और देते हो 42 रुपये। यह कैसे?

सेठ – अरे भाई, काँटा तुम्हारे सामने है। खुद ही तोल लो।

पवन – वह मैं नहीं जानता, पर कुछ न कुछ गड़बड़ तो है। आप कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं। यह बात मेरी समझ में आ गई है।

सेठ – सुनो भाई, तुम चाहो तो 50 रुपये दे दूँ।

पवन – नहीं-नहीं, अब आपका मायाचार प्रकट हो गया। अब मुझे आपको अखबार नहीं देने। अरे सेठजी, आपने फोटो तो महावीर भगवान का लगाया है और काम गलत करते हो। मैं भी जैन हूँ। आज उत्तम आर्जव (सरलता) धर्म का दिन है। कम से कम आज तो मायाचार नहीं करते।

सेठ – आप ठीक कहते हैं, पर ये पापी जीव इस धन ले लोभ के चक्कर में सब कुछ भूल जाता है। इसे धर्म नहीं, धन मुख्य लगता है।

पवन – लेकिन भाई! यदि समझने की कोशिश करें, तब ही तो हम पाप के मार्ग को छोड़कर धर्म के मार्ग पर चलेंगे।

सेठ – बिल्कुल ठीक कहा आपने भाई साहब! आगे से अब मैं भी छल-कपट का कोई काम नहीं करूँगा।

(पटाक्षेप)

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – एकांकी की विषयवस्तु पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. मायाचार किसे कहते हैं?
2. आर्जव का आशय लिखिए?

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. हम पाप के मार्ग को छोड़कर .... के मार्ग पर चलेंगे।
2. पापी जीव धन के .... में सब भूल जाता है।

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 2 – लोभ करना बुरा क्यों है? इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 3 – अपनी खोज करो कि आप व्यापारी बनेंगे तो कैसा व्यवहार करेंगे? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 4 – नीति और आचरण विषय पर कहानी और कविता खोज कर पढ़िए।

रचना

प्रश्न 5 – ईमानदारी पर कोई एकांकी लिखिए।

यह भी जाने –

''जहाँ आप हैं, वहाँ ईमानदार रहें, ताकि आप जहाँ होना चाहते हैं, वहाँ पहुँच सकें।'' – जायसी मेयर।

''जीवन में ईमानदार बनने के लिए साहस करो, कभी भी मेहनत करने से मतरुको।''

''किसी चीज पर विश्वास करना और उसे न जीना बेईमानी है।'' – महात्मा गाँधी

''मुसीबत के सामने ईमानदार और सच्चा बने रहना हमेशा मददगार होता है।'' – दलाई लामा।

एक ईमानदार व्यक्ति होने का क्या अर्थ है?

ईमानदार व्यक्ति अधर्म को त्याग कर धर्म के मार्ग पर चलता है अर्थात् झूठ, धोखा जैसे बुरे काम को छोड़ कर सच्चाई को अपनाने वाला इंसान ईमानदार व्यक्ति की श्रेणी में आता है। ईमानदार होने का अर्थ है कि मनुष्य अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार हो अपने धर्म और कर्म का पालन करे।

6 हमारे पर्व : दीपावली

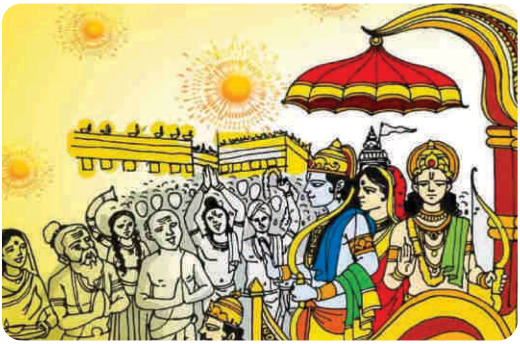

हिन्दू धर्म ग्रन्थों के अनुसार भगवान श्री राम 14 वर्ष के वनवास की अवधि पूर्ण कर अपनी जन्मभूमि अयोध्या लौटे थे, इसलिए अयोध्या-वासियों ने प्रसन्नतापूर्वक दीपोत्सव का आयोजन कर भगवान श्रीराम का स्वागत किया था। तब से हर साल कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को दीपावली का त्योहार उसी हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। साथ ही घरों के साथ-साथ आसपास की जगहों को भी रोशनी से सजाया जाता है। इस दिन लक्ष्मी व गणेश पूजन की जाती है।

दीपावली के विषय में हिंदू धर्म में प्रख्यात ग्रंथ महाभारत में यह बताया गया है कि कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को पांडव 12 वर्ष का वनवास 1 वर्ष का अज्ञातवास पूरा कर अपने घर लौटे थे। जब पांडव वापस अपने घर लौट कर आए थे तब उनके घर आगमन की खुशी में नगरवासियों ने दीपोत्सव के साथ उनका स्वागत किया था। मान्यता है कि तब से ही दीपावली पर्व मनाया जाता है।

शास्त्रों में इस बात का वर्णन मिलता है कि जब देवता और असुर समुद्र मंथन कर रहे थे। तब समुद्र मंथन से 14 रत्नों की उत्पत्ति हुई थी, जिनमें से एक माता लक्ष्मी भी थीं। मान्यता है कि कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को माता लक्ष्मी का जन्म हुआ था। दीपावली के दिन भगवान गणेश और माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

जैनधर्म के अनुसार चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी को 72 वर्ष की आयु में कार्तिक कृष्ण अमावस्या मंगलवार 15 अक्टूबर 557 ईसा पूर्व को पावापुरी से मुक्ति/निर्वाण की प्राप्ति हुई थी। इस दिन प्रातः निर्वाण दिवस के अवसर पर निर्वाण फल/लाडू चढ़ाकर भगवान महावीर की पूजन करके संसार के दुःखों से छूटने की भावना भाते हैं। इसी दिन शाम को उनके ही परम शिष्य इन्द्रभूति गौतम गणधर को केवलज्ञान (पूर्णज्ञान) की प्राप्ति हुई थी अतः ज्ञान के प्रतीक के रूप में दीपक प्रज्वलन एवं ज्ञानदायक शास्त्रों की पूजन की जाती है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – निबंध की विषयवस्तु पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. दीपावली कब मनायी जाती है?
2. निर्वाण की प्राप्ति किसे और कब हुई ?

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. हिन्दू धर्म का प्रख्यात ग्रंथ .... है ।
2. इंद्रभूति गौतम गणधर को .... की प्राप्ति हुई ।

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 2 – दीपावली पर पटाखे फोड़ना बुरा क्यों है? इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 3 – सोचिए कि कोई व्यक्ति कैसे महान बन सकता है? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 4 – आज की दीपावली पर पर्यावरण की सुरक्षा कैसे हो? सोचकर लिखिए।

रचना

प्रश्न 5 – श्री राम की घर वापसी पर कोई एकांकी लिखिए।

यह भी जाने –

निर्वाण अर्थात् क्या?

सिद्ध अवस्था को निर्वाण अवस्था कहा जाता है। जैनधर्मानुसार, शरीर और आत्मा दोनों स्वभाव से ही भिन्न वस्तुएँ हैं तथा जब ये बाहर में भी भिन्न हो जाते हैं, तब अशरीरी सिद्ध दशा प्रगट होती है। जब शरीर होता है तो उसके पालन-पोषण हेतु आहार-विहार-निहार होता है। सुबह उठने से शाम सोने तक के सारे काम इस शरीर के लिए ही होते हैं। परंतु जब शरीर का ही अभाव हो जाता है, तो ये सारी क्रियाएँ छूट जाती हैं। यूँ कहें, इनकी आवश्यकता ही नहीं रहती। संसार के सारे दुख इस शरीर और इसके सम्बन्धियों की ओर दृष्टि करने से होते हैं। पैसे, परिवार और अन्य सब कुछ, इस शरीर से सम्बन्ध मानने से ही हमसे जुड़ते हैं। सबसे पहले शरीर आदि की दृष्टि (उनमें अपनापन) छूटती है, फिर वे सब बाहर में छूटते हैं (त्याग/मुनिदशा) और पश्चात् इन सबका पूर्णतः त्याग होकर मुक्त (भगवान) अवस्था प्रगट होती है। साथ ही उत्पत्ति होती है अनंत सुख की। हाँ, वही सुख जो हम यहाँ संसार के सभी कोनों में खोजते घूम रहे हैं। मात्र सुख ही नहीं, अपितु अनंत गुण-उनकी प्रगटता मोक्ष में होती है।

7 हमारे तीर्थ : सम्मेद शिखर

भारतवर्ष महापुरुषों की जन्मभूमि है। इन महापुरुषों के जन्म, विहार व निर्वाण की प्राप्ति से पवित्र हुए स्थानों को तीर्थ क्षेत्र के रूप में पूजा जाता है।

झारखंड में स्थित तीर्थराज सम्मेद शिखर दिगम्बर/श्वेतांबर जैन धर्म का महान तीर्थ है। जैनागम के अनुसार जितने भी तीर्थंकरों का जन्म होता है वह अयोध्या में एवं निर्वाण अर्थात् मोक्ष सम्मेदशिखर से ही होता है; इसलिए इसे शाश्वत तीर्थराज माना गया है।

यह काल जैन परम्परा के अनुसार किंचित् दोष पूर्ण काल है, अतः चौबीस तीर्थंकरों में से बीस तीर्थंकरों का निर्वाण सम्मेद शिखर से हुआ। तीर्थंकरों के अतिरिक्त करोड़ों मुनिराजों का निर्वाण भी इस तीर्थराज से हुआ है इसलिए समस्त जैन धर्मावलंबियों के लिए इस पर्वतराज का कण-कण पवित्र है। यहाँ के आध्यात्मिक/प्राकृतिक पर्यावरण में प्राणी मात्र को शान्ति का अनुभव होता है।

तीर्थराज की तलहटी में जिसे मधुबन कहा जाता है में शताधिक जिन मन्दिर तथा हजारों यात्रियों को ठहरने की व्यवस्थाएँ हैं। सम्मेद शिखर का निकटवर्ती रेलवे स्टेशन तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के नाम से 'पारसनाथ' कहलाता है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – निबंध की विषयवस्तु पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. झारखंड में स्थित पारसनाथ स्टेशन किसके नाम से प्रसिद्ध है?
2. शाश्वत तीर्थराज किसे और क्यों कहा जाता है?

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 2 – पर्वत राज का कण–कण प्रसिद्ध है, इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 3 – सोचिए कि कोई व्यक्ति कैसे पूजने योग्य बन सकता है? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस–पास

प्रश्न 4 – यात्रियों का कर्तव्य विषय पर एक निबंध लिखिए?

रचना

प्रश्न 5 – कल्पना कीजिए और लघुकथा लिखिए विषय–पार्श्वनाथ का जन्म उत्सव।

यह भी जाने –

सम्मेद शिखर तीर्थ या पारसनाथ पर्वत तीर्थ क्षेत्र के साथ ही पूरे भारत में प्राकृतिक, ऐतिहासिक व धार्मिक महत्त्व रखता है। यह समुद्र के तल से 520 फ़ीट की ऊँचाई पर लगभग 9 किलोमीटर की परिधि में फैला है। सम्मेद शिखर तीर्थ पारसनाथ पर्वत की उत्तरी पहाड़ियों एवं प्राकृतिक दृश्यों के बीच स्थित तीर्थ स्थान है। यहाँ पर प्राकृतिक हरियाली और प्रदूषण मुक्त वातावरण के मध्य स्थित गगनचुम्बी मंदिरों की श्रृंखला लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इस तरह यह तीर्थ क्षेत्र भक्तों के मन में भक्ति व प्रेम की भावना को जगाता है तथा उनको अहिंसा और शांति का संदेश देता है।

8 कविताएँ

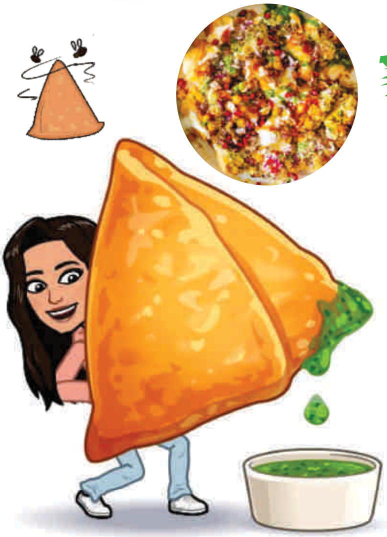

1. गंदी चाट कभी न खाओ

देखो यह मजदूर की बेटी
गंदे बिस्तर पर है लेटी
उसके पिता समोसे लाये
दोनों ने मिलकर के खाये
वे दोनों बीमार हो गए
ज्वर के तीव्र शिकार हो गए
गंदी चाट कभी न खाओ
खुद समझो सबको समझाओ

2. पानी सदा स्वच्छ पीना

गंदा पानी आया नल में
पीकर ज्वर आया दो पल में
उसको उलटी दस्त हो गए
हाथ पैर भी पस्त हो गए
पानी सदा साफ पीना है
स्वस्थ रहो लंबा जीना है
गंदा पानी रोज उबालो
उसमें थोरा फिटकरी डालो

3. योगाभ्यास करो हर दिन

सुबह-सुबह उठकर करो,
प्रति दिन योगाभ्यास।
दिन भर फिर न रहेगा,
मन और चित्त उदास।
होना कभी निराश मत,
निश दिन करो प्रयास।
तुम्हें मिलेगी सफलता,
रखो आत्म विश्वास।

4. बिस्तर को फटकारो रोज

बिस्तर को फटकारो रोज।
चादर को झटकारो रोज।
अच्छी लम्बी झाड़ू से,
घर को ठीक बुहारो रोज।
अम्मा बापू के संग में,
थोड़ा समय गुजारो रोज।।

5. बच्चे लगते वेद पुराण

नटखट और शैतान ये बच्चे,
दिल से बड़े महान ये बच्चे।
इन्हें ठीक से परखो तो,
हैं भारत की शान ये बच्चे।
लिखा है इनके माथे पर,
ऋषियों की संतान ये बच्चे।
इन्हें ठीक से पढ़ डालो,
लगते वेद पुराण ये बच्चे।

शिक्षा

निंदा चुगली कभी न करना।
उत्तेजित हो कभी न लड़ना।।

प्रेम भाव सब ही से रखना।
यथायोग्य सहयोग भी करना।।
सत् पुरुषों की करो प्रशंसा।
सत् कार्यों की भी अनुशंसा।।

मिथ्या पक्षपात से बचना।
गुण ग्राहक सर्वत्र ही रहना।।
अच्छा सोचो अच्छा बोलो।
अच्छा ही आचरण भी करना।।

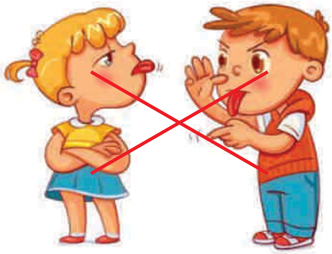

दुर्भावों से डरते रहना।
फल तुमको भी पड़े भोगना।।
झूठे साथी छोड़ भगेंगे।
सावधान पहले ही होना।।

जागो-जागो मेरे भाई

जागो-जागो मेरे भाई, समय नहीं अब सोने का।
सोते-सोते सदियाँ बीतीं, समय नहीं अब खोने का।।1।।

जितने दिन बीते जीवन के, उतने दिन कम हुए उम्र के।
प्रतिपल कल को आज समझ लो, पता नहीं कब जाने का।।2।।

कोटि जन्म जब तेरे बीते, दुर्लभ नर-भव अब पाया।
चिंतामणि मत फेंक उदधि में, हाथ नहीं फिर आने का।।3।।

किसका कब तक फिक्र करेगा, होगा वही जो होने का।
मीठा फल तू यदि चाहता, आम तुझे अब बोने का।।4।।

पूजक अब तक बना रहा तू, पूज्य तुझे अब बनने का।
'चेतन' नर-भव सफल बना ले, बस इतना अब कहने का।।5।।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – कविता की विषयवस्तु पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. गंदी चाट और अस्वच्छ पानी सेवन करने के नुकसान बताइए।
2. निंदा–चुगली, पक्षपात, झूठ आदि बुरी आदतों का क्या परिणाम होता है?

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. कोटि जन्म जब तेरे बीते .... अब पाया।
2. पूजक अब तक बना रहा तू .... तुझे अब बनने का।

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 3 – योगाभ्यास का महत्त्व इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 4 – सोचिए कि शुद्ध भोजन–पानी से जीवों की रक्षा भी होती है? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस–पास

प्रश्न 5 – शुद्ध खान–पान विषय पर एक निबंध लिखिए?

रचना

प्रश्न 6 – कविता पूरी कीजिए – बोलो सच, झूठ तजो ----

यह भी जाने –

बहुत ज्यादा तेल, मसालों से बने, पैक्ड तथा गरिष्ठ भोजन का उपयोग न करें। खाने को सही तापमान पर पकाएँ और ज्यादा पकाकर सब्जियों आदि के पौष्टिक तत्त्व नष्ट न करें। साथ ही ओवन का प्रयोग करते समय तापमान का खास ध्यान रखें। भोज्य पदार्थों को हमेशा ढँककर रखें और ताजा भोजन खाएँ। समय पर भोजन करें। जितना ज्यादा हो सके पानी पिएँ। फ्रिज का ठंडा पानी पीना बंद कर दें। रोज़ाना कम से कम 3 किलोमीटर चलें। रात को भोजन करने और सोने में कम से कम 2 घंटे का फासला होना चाहिए। सप्ताह में कम से कम 3 बार व्यायाम करें। जूस की जगह फल का सेवन करें।

९ सदाचार

सत्यं वद

वर्तमान समय में हम सभी किसी लाभ पाने अथवा सजा या नुकसान से बचने के लिए किसी न किसी रूप में झूठ बोलते रहते हैं। जबकि हम पढ़ते यह हैं कि 'सत्यं वद' अर्थात् सत्य बोलो।

अनेक लोग सत्य भी बोलते हैं तो भी यह मानकर कि 'जैसा देखा, जाना, वैसा ही कह दिया, वह सत्य होगा' परन्तु यह सही नहीं है। ''सत्य बोलने से पहले सत्य को समझना आवश्यक है।''

अनेक बार ऐसा होता है कि जो दिखता है या जो सुनने में आता है वह सही नहीं है। जैसे – घर में माँ छोटे बच्चे को डाँटते हुए कहे कि तूने यदि यह कार्य नहीं किया तो मैं तेरे हाथ-पैर तोड़ दूँगी। यह सुनकर हम पुलिस के पास रिपोर्ट कराने जाएँ कि एक माँ अपने बच्चे को मारने वाली है यह बात मैंने अपने कानों से सुनी है।

यह सत्य है कि आपने कानों से सुना है; परन्तु यह सत्य नहीं है कि वह उसे मारना चाहती है। इसी तरह अनेक प्रसंग हो सकते हैं।

कुछ लोग यह सोचकर भी कि हमें सत्य बोलना है तो कुछ भी किसी को कह देते हैं और फिर बोलते हैं कि 'आपको बुरा लगे तो भले लगे लेकिन मैं तो स्पष्टवादी हूँ अथवा सत्यवादी हूँ।' यह बात सही है कि हमें सत्य बोलना चाहिए; लेकिन किसी का दिल दुखे – ऐसा भी नहीं बोलना चाहिए। यदि हम अपने जीवन में सुख-शान्ति चाहते हैं, दूसरों के साथ मित्रता निभाते रहना चाहते हैं, विश्वास बनाए रखना चाहते हैं तो हमें असत्य/झूठ से बचना चाहिए।

असत्य से बचने के पहले हमें असत्य के प्रकारों को समझना आवश्यक है। असत्य चार प्रकार के हैं –

1. सत् का अपलाप – (है को न कहना) जो या जैसा है, वैसा ना कह कर उसे छुपाना। हमने जो कार्य किया है या होते देखा है या जो वस्तु हमारे पास है या जो व्यक्ति हमारे पास है फिर भी उसे छुपाना, वह बात नहीं बतलाना सत् का अपलाप कहलाता है।

2. असत् का उद्भावन (जो नहीं है उसे है कहना) – जो कार्य हुआ ही नहीं है, जो बात कही ही नहीं गई वह सबके बीच कहना वह असत् का उद्भावन कहलाता है।

3. अन्यथा प्ररूपण – जो बात कही गई थी या जो कार्य किया गया था, किसी ने जो हमसे वादा किया था उसके स्थान पर बदलकर लोगों के सामने बात रखना अर्थात् कुछ का कुछ कहना वह अन्यथा प्ररूपण नाम का असत्य कहलाता है।

4. गर्हित वचन – अश्लील गालियों का प्रयोग करना, किसी की निंदा करना, चुगली करना, किसी का दिल दुखाने के लिए शब्दों का प्रयोग करना, कोई घटना या बात सत्य होते हुए भी किसी का अपमान करने की भावना से कहना, धर्म के विरुद्ध बोलना जैसे कि हिंसा में धर्म होता है, किसी की बलि आदि दे देने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, इस प्रकार के वचनों को बोलना गर्हित वचन नाम का असत्य कहलाते हैं।

असत्य के उक्त प्रकारों को समझकर हमें इन असत्यों से बचना चाहिए। हमें ऐसा सत्य भी नहीं बोलना चाहिए जो किसी को बुरा लगे, दुख देने वाला हो। साथ ही जानकर किसी का अपमान करने वाला सत्य भी नहीं बोलना चाहिए।

हम सत्य बोले परन्तु प्रिय बोलें। यदि ऐसा हुआ तो हमारा जीवन बहुत सुखद होगा।

अनर्थदण्ड

सांसारिक जीवन में हमारे दैनिक कार्यों में पाप के कार्य होना स्वाभाविक बात है। कुछ पाप ऐसे होते हैं, जिनके बिना हमारा जीवन ही नहीं चल सकता। जैसे – भोजन बनाना, चलना, बर्तन माँजना, नहाना,

व्यापार आदि कार्य। चार प्रकार की हिंसा में इन्हें आरम्भी और उद्योगी हिंसा कहा है। साथ ही यह भी निर्देश है कि हमें ऐसे व्यापार नहीं करना चाहिए जिनमें प्रत्यक्ष हिंसा का पाप होता हो जैसे चमड़े या कीटनाशक दवाइयों आदि का। हम ऐसे कार्य करके पाप का बन्ध करते हैं, जिनसे कोई लाभ नहीं होता और जो किसी काम के लिए उपयोगी नहीं होते हैं इन्हें अनर्थदण्ड कहा जाता है। दण्ड जो दण्ड (डंडे) के समान पीड़ा दे वह अनर्थदण्ड है अथवा जो अनावश्यक दण्ड या सजा दिलाये वह अनर्थदण्ड है। ये कार्य दूसरों को या स्वयं को प्रसन्न करने के लिए किये जाते हैं जो महापाप उत्पन्न करते हैं और दुर्गति का कारण बनते हैं।

अनर्थदण्ड के भेद –

पापोपदेश – बिना प्रयोजन खेती, हिंसक व्यापार, मायाचारी, पशुओं के व्यापार, बिजली का मीटर धीमा करने, टैक्स बचाने, मकान बनवाने, कुँआ खुदवाने, पौधे लगाने आदि का उपदेश देना।

हिंसादान – बिना प्रयोजन तलवार, चाकू, चूहा मारने की दवाई, मच्छर मारने के लिए गुडनाइट आदि हिंसक उपकरण किसी को देना।

अपध्यान – बिना प्रयोजन दूसरे की हार-जीत आदि का विचार करना। जैसे – क्रिकेट मैच में देखने में समय बरबाद करना। अपना अहित सोचना यदि मेरा एक्सीडेन्ट हो जायेगा तो परिवार का क्या होगा? दुकान में आग लग जाये तो क्या होगा? आदि अशुभ विचार करना।

दुःश्रुति – खोटे शास्त्र, उपन्यास, चुटकुले, हँसी मजाक, स्त्री-शृंगार की बातें आदि पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना।

प्रमादचर्या – बिना प्रयोजन चलना–फिरना, पृथ्वी खोदना, पानी फैंकना, घास–पत्ती तोड़ना, मंदिर जाते समय सब्जी खरीदना, गाड़ी धोने में पानी बरबाद करना, बोरिंग के पानी से टंकी भरने पर भी पानी बहाना, मंजन करते समय पानी बहाना, फव्वारे से नहाना, एक गिलास पानी लेकर आधा पानी पीना बाकी फेंकना, टीवी देखना यह सब प्रमादचर्या के अन्तर्गत आता है। यह सब महापाप का कारण है।

अथवा अनर्थदण्ड तीन प्रकार के होते हैं –

मानसिक अनर्थदण्ड – बिना काम के विचार करना। जैसे – भिखारियों को देखकर सोचना बहुत पैसा कमाते हैं, किन्नरों को देखकर उनकी पर्याय की करुणा नहीं आना पर उनको पैसा माँगते देखकर सोचना कि ये काम अच्छा है, बिना काम किये बहुत कमाई होती है।

वाचिक अनर्थदण्ड – चुटकुले सुनाना, हंसी मजाक करना, किसी की निन्दा करना, फिल्मों या सीरियल की कहानी सुनाना।

कायिक अनर्थदण्ड – बिना प्रयोजन इधर–उधर घूमना, हाथ नचाना, पैर पटकना।

या अनर्थदण्ड दो प्रकार के भी हैं –

लौकिक क्षेत्र में किये जाने वाले – विवाह, जन्मदिवस के आयोजनों में अनावश्यक रुपया खर्च करना, खाना–पीना, बिना प्रयोजन घर में सामान एकत्र करना, नाली में गरम पानी फैंकना, बिना देखे सामान खिसकाना, बिना देखे चलना।

अलौकिक क्षेत्र में किये जाने वाले – मंदिर, तीर्थक्षेत्र, व्रत–उपवास आदि कार्यों में अनावश्यक क्रियायें या विचार करना।

सार की बात यह है कि हम इन पापों से बचने का प्रयास करें और प्रयोजनभूत कार्यों को करें, जिससे स्वयं और समाज को लाभ पहुँचे।

पाव-ब्रेड : कितना अभक्ष्य है? वो जानिये

पहली हिंसा – पाव मैदा से बनता है। मैदा गेहूँ से बनता है। फ्लोरमील में स्टोरेज किये हुए 2-4 महीने पुरानी गेहूँ की बोरियों को खोलने से पता चलेगा कि उसमें अनगिनत धान्यकीट होते हैं। ऐसे गेहूँ को गरम पानी में भिगोने या चक्की में पीसने से धान्य कीट मर जाते हैं, यह पहली हिंसा।

दूसरी हिंसा – भीगे गेहूँ को सुखाकर, पीसकर, मैदा बोरियों में पैक होता है। कई दिनों तक पड़े रहने से मैदा खाने लायक नहीं रहता। अनेक जीव उत्पन्न होते हैं। ऐसा मैदा बेकरीवाले लेते हैं, उसमें खट्टा पदार्थ मिलाने पर अनेक जीव मर जाते हैं। यह दूसरी हिंसा।

तीसरी हिंसा – पुराने आटे में फफूंद भी होती है और त्रस जीव उत्पन्न होते हैं। उसको ओवन में पकाने से वे सब जीव मरते हैं। यह तीसरी हिंसा।

चौथी हिंसा – थोड़ा गीला पाव ओवन से बाहर निकाल लेते हैं। रात रहने से वह बासी होता है, जिसमें फिर से त्रस जीवों (बेक्टीरिया) की उत्पत्ति होती है, ऐसे पाव खाने से चौथी हिंसा।

पाँचवीं हिंसा – ऐसे जीव जंतु वाले पाव खाने से बीमारी का कारण बनते हैं और एलोपेथिक दवाईयों द्वारा पेट में रहने वाले जीव मर जाते हैं, यह पाँचवीं हिंसा।

ऐसी हिंसा की परंपरा से बना हुआ पाव-ब्रेड, सेन्डवीच, दाबेली, बड़ापाव और पावभाजी आदि बिकता है, जो बिल्कुल खाने लायक नहीं है, ऐसे पाव-ब्रेड का जीवन भर त्याग करके आत्मा को पाप से और शरीर को रोग से बचाइये।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. सत् का अपलाप किसे कहते हैं?
2. गर्हित वचन से क्या आशय है? लिखिए।

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. बिना प्रयोजन खेती, हिंसक व्यापार, टैक्स बचाने आदि का उपदेश देना .... कहलाता है।
2. .... वाचिक अनर्थदंड है।
3. जीव हिंसा करके बना पदार्थ .... कहलाता है।

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 3 – असत्य के प्रकार इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 4 – सोचिए कि पाव ब्रेड की तरह बनने वाले कितने पदार्थ हैं जो अभक्ष्य कहलाते हैं, क्योंकि उन्हें बनाने में जीव हिंसा होती है? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 5 – हिंसा और अहिंसा की तुलना करते हुए नोट्स बनाइये?

रचना

प्रश्न 6 – ईमानदारी विषय पर लेख तैयार कीजिए।

यह भी जाने –

नैतिकता मूल्यों और सिद्धांतों का समूह है जो सही और गलत के बीच का अंतर तय करती है। नैतिकता वह मार्गदर्शक शक्ति है जो आपको सही काम करने में मदद करती है, हालांकि इसमें खतरा भी शामिल है। नैतिक मूल्य व्यक्ति के चरित्र को परिभाषित करते हैं। अच्छी नैतिकता वाले व्यक्ति को हमेशा समाज से सम्मान प्राप्त होता है। नैतिकता न केवल व्यक्तिगत जीवन बल्कि पेशेवर जीवन को भी प्रभावित करती है। अच्छी व्यावसायिक नैतिकता वाले संगठनों को हमेशा सम्मान मिलता है और कड़ी प्रतिस्पर्धा में भी टिके रहते हैं। यह उचित-अनुचित क्या है? यह तय करने में मदद करता है। घर वह पहला स्थान है जहाँ हम अपनी बुनियादी नैतिकता और मूल्यों को सीखते हैं। माता-पिता सबसे अच्छे शिक्षक होते हैं जो अपने बच्चों को नैतिक और नैतिक मूल्यों को सीखने में मदद करते हैं। अगर हम सफल होना चाहते हैं तो व्यक्तिगत नैतिकता के अलावा व्यावसायिक नैतिकता भी महत्त्वपूर्ण है।

10 जीवन निहारें-जीवन निखारें

उन्नत विचार - सफलता का आधार

"जिंदगी में कुछ अनोखा कर दिखाने की महत्त्वाकांक्षा का होना ही पर्याप्त नहीं है; उसके लिए आत्मविश्वास, दृढ़इच्छा-शक्ति, परिश्रम और ईमानदार कोशिश की आवश्यकता है।"

"It is not enough to wish to achieve extraordinary in life; it needs Self Confidence, Perseverance, Hard work and Honest Efforts to achieve the Big Goal." - अज्ञात

पूर्वोक्त भावनाओं के अतिरिक्त अन्य भी विशिष्ट भाव/विचार हैं, जिनको लेकर हम अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं, जिनमें से कुछ भावों/विचारों की चर्चा हम यहाँ क्रमशः कर रहे हैं -

1. 'बड़ा/पूर्ण लक्ष्य बनाने की क्षमता' - एक आदर्श जीवन अथवा आकर्षक व्यक्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि हम जो भी लक्ष्य बनायें, वह लक्ष्य बड़ा हो, पूर्ण हो। **'पूर्णता के लक्ष्य से की गई शुरुआत ही, सच्ची शुरुआत कहलाती है।'** हमने देखा होगा कि दुनियाँ में अनेक लोग हैं, जो कार्य करना चाहते हैं, परंतु वे बहुत छोटे-छोटे लक्ष्य लेकर ही चलते हैं; इसलिए उन्हें कोई विशिष्ट सफलता की प्राप्ति नहीं होती और न ही वह एक आदर्श व्यक्तित्व बन पाते हैं। हम जो कुछ भी बनना चाहते हैं, जिस क्षेत्र में भी कार्य करना चाहते हैं, हमेशा ही एक बड़ा लक्ष्य लेकर के चलें।

यह पहले कहा जा चुका है कि हम अपनी क्षमता को पहचाने और क्षमता को पहचान कर ही हम अपना लक्ष्य निर्धारित करें, मात्र वर्तमान की परिस्थितियों को ही न देखें, मात्र वर्तमान में हमारे पास जो साधन हैं उनको ही न देखें; परंतु हम एक ऊँचा लक्ष्य बनाएँ।

जो भारतीय प्रशासनिक सेवा का लक्ष्य लेकर के चलेगा वह यदि दुर्भाग्य से वहाँ तक नहीं पहुँचता है तो प्रादेशिक प्रशासनिक सेवा में तो चयन होगा ही, जो विद्यार्थी 95 प्रतिशत का लक्ष्य लेकर के चलता है यदि दुर्भाग्य से वह वहाँ तक न पहुँचे तो 85 प्रतिशत अंक तो लाता ही है; इसलिए हमें हमेशा ही पूर्णता का लक्ष्य लेकर ही कार्य प्रारंभ करना चाहिए, कभी भी आधे-अधूरे लक्ष्य लेकर हमें नहीं चलना चाहिए, अन्यथा हम कभी भी जीवन में सफल नहीं हो पायेंगे।

लोकोत्तर दृष्टि से भी देखें तो हमारा लक्ष्य पूर्ण सुख ही है/अनंत सुख ही है और उस अनंत सुख की प्राप्ति के लिए जो योग्यतम साधन जुटाए जाने चाहिए, जो पुरुषार्थ किया जाना चाहिए, वही पुरुषार्थ करने योग्य है। यदि कदाचित् अभी वर्तमान में हमारे पास वह साधन उपलब्ध नहीं हैं **तो जुनून पैदा करें, अधीर न हों, हताश न हों। लक्ष्य को कमजोर न करें।** कहा भी है - **'लक्ष्य न ओझल होने पाए'** यदि हमारे चित्त से लक्ष्य ही गायब हो गया तो हम कभी भी पूर्ण लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकेंगे।

2. लक्ष्य निर्धारण - हमारी सफलता और असफलता के पीछे लक्ष्य का निर्धारण किया जाना आवश्यक है। यदि हम योग्य लक्ष्य निर्धारित नहीं कर पाते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं तो असफलता ही मिलेगी। हम अपने जीवन का/अपनी क्षमताओं का/अपनी आवश्यकताओं का/अपने साधनों का मूल्यांकन करते हुए लक्ष्य का

निर्धारण करें; केवल देखा-देखी लक्ष्य निर्धारण करने वाले सफल नहीं होते या सफल हो भी जाएँ तो भी उनका जीवन सार्थक नहीं होता। हमारे आसपास के अनेक युवा अन्य की देखादेखी उचित लक्ष्य का निर्णय न करने से असफलता मिलने पर हताशा से भरे हुए, बाह्य संसाधनों, समय, व्यक्तियों पर दोषारोपण करते देखे जाते हैं तथा स्वतः कुंठाग्रस्त होकर अन्य को भी हताशा और निराशा के विकट भँवर में झोंक देते हैं जबकि सबकी क्षमतायें, उदयजन्य अनुकूलता/प्रतिकूलतायें पृथक्-पृथक् होती हैं, यह सब विचार कर ही लक्ष्य निर्धारण करना चाहिए।

हमने जो चाहा वह मिल गया, यह मात्र सफलता है; लेकिन हमने हमारे प्रयोजन को सिद्ध किया, हमने अपने जीवन में शांति-सुख-चैन प्राप्त किया, हमने वह कार्य किया जो हमारे लिए तो सुखद है ही; परंतु अन्य के लिए भी दुखद नहीं है, सुखद ही है; यह हमारे कार्य की सार्थकता है; इसलिए हम कार्य आरंभ करने से पहले **'लक्ष्य निर्धारण'** बहुत ही सोच-विचार कर करें और फिर आगे बढ़ें तो हमारे जीवन में सफलता के साथ सार्थकता भी होगी।

3. उत्साह संपन्नता - हम जो भी कार्य करें, वह उत्साह से भरपूर हो करके करें। अनेक लोग पहले ही अनेक **'तो'** लगा करके कार्य प्रारंभ करते हैं - सफल नहीं हुए तो? वहाँ तक नहीं पहुँचे तो? कोई विघ्न आ गया तो? किसी ने साथ नहीं दिया तो? कहीं बीमार पड़ गए तो?

यह जो कुशंकाएँ हैं, यह व्यक्ति के पैरों में बेड़ी बन करके उसे आगे नहीं बढ़ने देती। 'यह कार्य हो करके ही रहेगा', **'उछलता मेरा पौरुष आज, त्वरित टूटेंगे बंधन नाथ'** ऐसा लगे कि मेरा पुरुषार्थ ऐसा उछल रहा है कि मैं आज सर्व बंधनों को तोड़कर आज ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करके रहूँगा। जो उत्साहहीन होते हैं, वह कुछ भी कार्य करने जाएँ, असफलता ले करके ही आते हैं।

एक कहावत है **'रोते-रोते गए और मरे की खबर लेकर आए'।** जो व्यक्ति प्रारंभ से ही रो रहा है - यह कार्य हो नहीं सकता? कोई तो साथ दे नहीं रहा? कोई तो ऐसा कार्य कर नहीं रहा? ऐसे प्रश्न लगा करके जो बढ़ने को तैयार नहीं है - विघ्न बाधाओं से जो डर रहा है, वह अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच सकता।

मित्रो! आवश्यक है कि हम उत्साह से संपन्न हों, हम भले एकाकी हों, लेकिन सिंह की भाँति उत्साह/उमंग/उल्लास के साथ अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते रहें। जैसा कि सुभाषितकार कहते हैं -

उत्साहसंपन्नमदीर्घसूत्रं, क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वशक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढ़सौहृदं च, सिद्धिः स्वयं गच्छति वासहेतोः।।

अर्थात् जो उत्साह से संपन्न, बहुत अधिक विचार न करने वाला, क्रिया का जानकार, बुरी आदतों से दूर, सूर, कृतज्ञ और दृढ़ इच्छा शक्तिवाला होता है, सफलता उसके पास स्वयं ही आती है।

4. विघ्न बाधाओं से घबराएँ नहीं - लोक में अधिकांश देखा जाता है कि अच्छे कार्य करने वालों के लिए विघ्न बाधाएँ आती ही हैं; यह विघ्न बाधाएँ वास्तव में बाधाएँ न होकर मानो उस व्यक्ति की मानसिक परीक्षा के लिए हैं कि आप इतने बड़े लक्ष्य की ओर जा रहे हैं तो क्या उस लक्ष्य को पाने के आप हकदार हैं भी या नहीं? अथवा वह लक्ष्य आप पा लेंगे तो आप धैर्य-साहस के बिना उसे कैसे पचापाएँगे? अतः वह विघ्न हमारी संकल्प शक्ति को मजबूती प्रदान करते हैं।

बाहुबली मुनिराज/पार्श्वनाथ मुनिराज/गजकुमार मुनिराज/गुरुदत्त मुनिराज आदि कितने मुनिराजों पर किस-किस प्रकार के उपसर्ग हुए; परंतु उन्होंने अपना मार्ग नहीं छोड़ा, अपनी एकाग्रता नहीं तोड़ी तो आज वह मोक्षरूपी लक्ष्मी का वरण कर पूर्ण सुख का भोग कर रहे हैं। यदिवे उपसर्गों से भयभीत हो जाते तो आज वह पूज्यपद को प्राप्त नहीं करपाते।

देश की आजादी प्राप्त करने के लिए, कितने महापुरुषों ने अपना योगदान किया। उनके सामने कितनी विघ्न-बाधाएँ आईं? कितनी बार उन्हें जेल में डाला गया? कितनी उनको पारिवारिक प्रतिकूलताएँ दी गईं? कितनी शारीरिक यातनाएँ दी गईं? परंतु जो वज्र का हृदय लेकर अडिग रहे, उनकी बदौलत ही आज हम स्वतंत्र भारत में निवास कर रहे हैं। उनके लिए दिनकर की एक उक्ति उत्साहित करती है -

"सौभाग्य न सब दिन सोता है, देखें आगे क्या होता है।"

यह दुनिया का स्वरूप ही है कि पाप कार्यों के अनुमोदक बहुत मिल जायेंगे, साथ देने वाले मिल जायेंगे और जब भी आप कोई अच्छा कार्य करना प्रारंभ करेंगे उस समय आपके साथ कोई नहीं होगा, परन्तु घबराएँ नहीं जैसे ही आपको सफलता मिलना प्रारंभ होगी, लोगों की भीड़ आपके साथ होती चलेगी। आप तो स्व-पर हित की भावना से निश्चिंत होकर अपना कदम बढ़ाते चलें। जैसा कि कहा है -

श्रेयांसि बहुविघ्नानि, संभवन्ति पदे पदे।
अश्रेयसि प्रवृत्तौ च, प्रेरयन्ति पुनः पुनः।।

जग की अद्भुत रीति है बंधु, जिसे-समझना बड़ा कठिन।
श्रेय मार्ग के वीर पथिक को, पद-पद मिलते बहुत विघन।।
विषय-भोग अरु पाप पंथ को, प्रिय बन प्रेरित करते हैं।
धन्य धन्य वे शूर साहसी, आतमहित जो करते हैं।।

यह ध्यान रखें कि प्रतिकूलताओं/विघ्नों को पार करके ही कोई भी महान् बनता है जैसा कि एक गाने में प्रेरणा देने के लिए कहा गया है -

जिसने विष पिया बना शंकर, जिसने विष पिया बनी मीरा।
छेदा गया बना मोती, जो काटा गया बना हीरा।।

जो भी लोकपूज्य हुए हैं, बहुमूल्य हुए हैं, वह सभी इन विघ्न-बाधाओं को पार करके ही हुए हैं।

5. ईर्ष्या का अभाव – हम अपने जीवन को देखें कि क्या हम किसी की प्रगति को देखकर प्रसन्न होते हैं? यदि हमारा बेटा 85प्रतिशत अंक लाता है और हमारे ही अधीनस्थ कर्मचारी का बेटा 95 प्रतिशतलाता है तो क्या हम खुश होते हैं? तालियाँ बजाकर उसका उत्साहवर्धन करते हैं? हमारे बेटे का किसी प्रतियोगिता में चयन नहीं होता; लेकिन हमारे ही सामने रहने वाले एक चपरासी का बेटे का चयन हो जाता है तो क्या हम खुश होते हैं? उसकी पीठ थपथपाते हैं? समाज में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में किसी अन्य के बेटा-बेटी आगे बढ़ते हैं तो उन्हें देखकर हमें खुशी होती है? किसी को दान देता हुआ देखकर आप उनकी प्रशंसा करते हैं? व्यापार में हमारे प्रतिद्वंदी को लाभ होता है तो क्या हम खुश होते हैं? किसी दूसरे की बहू प्रशंसनीय कार्य करती है तो क्या हम उसकी अनुमोदना कर पाते हैं? या केवल हम यह कहकर कि –

- आजकल शिक्षक पढ़ानेवाले नहीं हैं!
- कांपियाँ ढंग से चैक नहीं होती हैं।
- नंबरों से क्या अंतर पड़ता है, ज्ञान मिलना चाहिए!
- हम बेटे को बहुत आगे बढ़ने के लिए प्रेरित नहीं करते हैं, नहीं तो अहंकार हो जाता है।
- वह तो दो नंबर का पैसा दान करने वाले हैं।
- वह तो दिखावे के लिए काम करते हैं!

इत्यादि प्रकार से हम अपनी कमी को छुपाकर और दूसरों की प्रगति की अनुमोदना न करके यही सिद्ध कर रहे हैं कि हमारे अंदर उनके प्रति ईर्ष्या भाव है; हम दूसरों की प्रगति, दूसरों की प्रशंसा को देखकर खुश नहीं होते हैं, यह एक बहुत बुरा भाव है।

मित्रो! हम इस ईर्ष्या भाव जिसे 'अदेख सका भाव' अर्थात् दूसरे की प्रगति को नहीं देख सकने के भाव को जीवन से निकालें।

जिस तरह से हम अपनी उन्नति और प्रगति में खुश होते हैं, अपने परिवार वालों की प्रगति और उन्नति में प्रसन्न होते हैं; उसी प्रकार हम अपने आसपास के रहनेवालों के प्रगति/उन्नति/प्रतिष्ठा में भी खुश हों, उनकी अनुमोदना करें, उनकी प्रशंसा करें, उनका उत्साहवर्धन करें; हमारी यह भावना सभी के बीच में हमको प्रशंसनीय बना देगी।

6. 'कृतज्ञता' – यशस्वी व्यक्तित्व की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है कृतज्ञता। कृत+ज्ञ=हमारे साथ जो कुछ भला किया गया है, जिसने उपकार/सहयोग किया है, उसका ज्ञान हमारे लिए हमेशा रहना चाहिए, कभी भूलना नहीं चाहिए।

हम अपने जीवन को, हृदय को निहारें कि क्या हमारे जीवन में कृतज्ञता है या नहीं?

क्या हम अपने लालन-पालन करने, चलना सिखाने, पढ़ना सिखाने, तन-मन-धन से सहयोग करने, मार्गदर्शन देने, सही दिशा में आगे बढ़ाने, हमारी उन्नति की भावना भाने, हमें उन्नति के पथ पर चलते हुए देखकर हमारी प्रशंसा करनेवालों के प्रति आभार का भाव/धन्यवाद का भाव रखते हैं या नहीं?

यदि कृतज्ञता का भाव हमारे हृदय में भरा हुआ नहीं है, तब हम कृतघ्नी हैं। 'कृतघ्नी' को सबसे बड़ा पापी कहा गया है।

कृतज्ञता एक मनमोहक गुण है। हमारे जो माता-पिता, दादा-दादी एवं अन्य परिजन हैं, प्राथमिक कक्षा से लेकर जो गुरुजन हैं, जो हमारे मित्रगण हैं, जो हमें हर समय सहयोग करते हैं, प्रेरित करते हैं, जिन्होंने हमारे व्यापारिक/पारिवारिक कार्य में/स्वाध्याय में लगने के लिए/जिन्होंने मंदिर बनाने के लिए/संस्थान खोलने के लिए/संस्थान संचालित करने के लिए तन-मन-धन से सहयोग किया, समय का दान किया, श्रम का दान किया, अपनी अनुमोदनाओं का दान किया उन सबके प्रति हमारा मन कृतज्ञता से भरा हुआ होना चाहिए।

जो विनम्र होते हैं वे अपने ऊपर किए गए किसी भी प्रकार के उपकार को – चाहे आवश्यकता के समय एक गिलास पानी पिलाया गया हो, चाहे आवश्यकता के समय 50 रुपये का सहयोग किसी ने किया हो या हमारे लिए समय पर औषधि दी हो, कोई योग्य शिक्षा दी हो उन सभी के प्रति यावज्जीवन आभारी रहने का भाव बनाये रखते हैं।

इस बात का भी ध्यान रखें कि किसी ने हमें जीवन में 50 रुपये दिए उसका हम 500 रुपये देकर भी आभार चुका नहीं सकते; क्योंकि जिस समय हमें 50 रुपये की आवश्यकता थी, वह समय आप विचार करें और जिसने उस समय आपको 50 रुपये दिए हैं, उसकी परिस्थिति का भी ध्यान करें तो पता लगेगा कि उस परिस्थिति का मूल्यांकन करते हुए 500 रुपये तो क्या 5000 रुपये और 50,000 रुपये देने पर भी हम मूल्य नहीं चुका सकते।

जो व्यक्ति अपने माता-पिता के लिए कहते हैं कि – आपने क्या किया? गुरुजन को कह देते हैं, आपने क्या पढ़ाया? हमने पढ़ा है, ऑनलाइन पढ़ा है; गुरुजन तो नौकरी करते हैं, उनका इसमें क्या उपकार है या एक धन्यवाद देकर ऐसा मान लेते हैं कि हमने उपकार का मूल्य चुका दिया, ऐसा कहने/माननेवाले कृतघ्न हैं।

हमारे आचार्य भगवंत लिखते हैं – **'न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति।'** सज्जन कभी भी अपने ऊपर किए गए माता-पिता, गुरुजन व अन्य किसी के उपकार को कभी भी नहीं भूलते हैं। आभारी होना और कृतज्ञ होना किसी भी उपकारी के प्रति उऋण होने का सबसे सुलभ, सरल और सार्थक साधन है।

मित्रो! इस कृतज्ञता के गुण के द्वारा अर्थात् आभार प्रदर्शन का भाव रखते हुए आप सभी से सदा ही स्नेह पाते रहेंगे, इस गुण से सबके बीच आपका व्यक्तित्व अलग निखरेगा/चमकेगा।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. पूर्ण लक्ष्य की पूर्णता के लिए क्या किया जाना चाहिए?
2. सफलता किससे प्राप्त होती है?

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. उछलता मेरा .... आज, त्वरित टूटेंगे बंधन नाथ।
2. धन्य धन्य वे शूर साहसी .... जो करते हैं।
3. .... एक मनमोहक गुण है।

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 3 – व्यक्तित्व को निखारने के लिए हम क्या करें – इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 4 – सोचिए कि जीवन में आपका लक्ष्य क्या है और आप उसमें सफलता पाने के लिए क्या योजना बना रहे हैं? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 5 – प्रसन्न रहने के लाभ बताइए?

रचना

प्रश्न 6 – मेरी महत्त्वाकांक्षा विषय पर लेख तैयार कीजिए।

यह भी जाने –

मैं अपने मस्तिष्क को स्वस्थ कैसे रख सकता हूँ?

स्वस्थ भोजन करो। उनमें विटामिन और खनिज होते हैं जो तंत्रिका तंत्र के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। जब आप अपनी बाइक चलाते हैं या अन्य खेल खेलते हैं, जिसमें सिर की सुरक्षा की आवश्यकता होती है, तो हेलमेट पहनें। शराब का सेवन न करें, ड्रग्स न लें या तंबाकू का सेवन न करें। अपने मस्तिष्क का उपयोग चुनौतीपूर्ण गतिविधियाँ करके करें, जैसे कि पहेलियाँ, पढ़ना, संगीत बजाना, कला बनाना या कुछ और जो आपके मस्तिष्क को कसरत देता है।

11 शिक्षाप्रद कहानियाँ

व्यसन की आग सब कर दे राख

बहुत समय पहले की बात है, जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में सदृतु नाम का एक नगर था। उस नगर में भावन नाम का एक बनिया रहता था। हरिदास उसका इकलौता पुत्र था।

भावन के पास अतुल धन-सम्पत्ति थी; किन्तु फिर भी उसे विदेश जाकर और अधिक धन कमाने की लालसा थी। उसकी पत्नी उसे विदेश जाने को मना करती थी, पर भावन अपनी लालसा नहीं रोक पा रहा था। अपनी चार करोड़ सोने की मुद्राएँ पुत्र हरिदास को धरोहर के रूप में सम्हलाते हुए, उसे जुआ-मदिरा आदि व्यसनों (गंदी आदतों) से दूर रहने का उपदेश देकर वह और अधिक धन कमाने के लिए विदेश चला गया।

हरिदास कच्ची उम्र का था। अभी उसमें हेय, उपादेय, उचित, अनुचित, लाभ-हानि का निर्णय करने की क्षमता विकसित नहीं हुई थी। समुचित देख-रेख, सम्यक् रोक-टोक, अनुशासन व अंकुश न होने तथा अनायास इतनी अधिक धनराशि मिल जाने से वह किशोर, व्यसनों की ओर उन्मुख हो गया।

धीरे-धीरे हरिदास ने जुए की लत और मदिरा-पान में अपना सारा धन गँवा दिया। पास का धन चुक गया तो हरिदास कर्जा लेने लगा। कुछ ही दिनों में उस पर काफी कर्जा चढ़ गया। लेनदार परेशान करने लगे। हरिदास को धनप्राप्ति का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था।

जैसा आचार–वैसा विचार, जैसी क्रिया वैसा व्यवहार। व्यसनों में डूबा हुआ व्यक्ति धन पाने के लिए मेहनत–मजदूरी नहीं करना चाहता। वह धन कमाने की कोशिश नहीं करता। वह तो बिना प्रयास, अनायास ही धन पाना चाहता है। इसलिए व्यसनों में रत व्यक्ति चोरी–डाका, धोखा आदि कुटेवों में ही उलझता–फँसता जाता है। अंकुश के अभाव में एक अवगुण नित नये अवगुणों को जन्म देता है।

हरिदास के साथ भी ऐसा ही हुआ। व्यसनों के कीचड़ में फँस जाने से उसका हर कदम, हर आचरण उसे और नये–नये व्यसनों के ही दलदल में फँसाता जा रहा था। अपना कर्ज चुकाने व खर्च चलाने के लिए उसने चोरी का मार्ग चुना। उसने राजमहल में चोरी करने की योजना बनाई। सही है, जहाँ अथाह धन–सम्पत्ति हो वहाँ चोरी करना आसान भी है और लाभदायक भी। सागर में से सौ–पचास घड़े पानी निकाल लिये जाएँ तो सागर पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

हरिदास ने अपने घर से राजमहल तक एक गुप्त सुरंग बनाई। उस सुरंग से जाकर वह प्रतिदिन अपनी इच्छानुसार धन चुराकर लाने लगा और उसे व्यसनों में गँवाने लगा।

कुछ समय बाद वणिक भावन धन कमाकर अपने घर लौटा। हरिदास उस समय अपने घर में नहीं था। भावन ने अपनी पत्नी से कुशल–क्षेम पूछकर जानना चाहा कि बेटा हरिदास कहाँ है?

माँ अपने बेटे की बुरी आदतों/व्यसनों से बहुत दु:खी थी। उसने पति से बेटे के व्यसनों व खोटे आचरण के बारे में बताते हुए कहा कि वह इस सुरंग मार्ग से राजमहल में चोरी करने गया है। भावन क्रोध व दु:ख के कारण उत्तेजना से भर उठा। पुत्र के अनिष्ट की आशंका से घबराकर वह स्वयं उस सुरंग से उसे ढूँढ़ने चल पड़ा।

हरिदास राजमहल से चोरी कर धन लेकर लौट रहा था। सुरंग में अंधेरा था। सामने एक मनुष्य–आकृति को देखकर हरिदास ने सोचा कि यह जरूर कोई भेदिया है, जिसे इस सुरंग मार्ग का पता लग गया है। यह

भेद खोल देगा तो मैं मारा जाऊँगा। अपनी मौत की आशंका से भयभीत हरिदास ने बिना आगा-पीछा सोचे, बिना देखे-भाले उस मनुष्य-आकृति को तलवार से मौत के घाट उतार दिया। आकृति के स्पन्दनरहित हो जाने पर जब हरिदास ने प्रकाश करके देखा तो वह चौंक उठा, उसने पहचाना – "अरे! ये तो मेरे पिता थे! पर ये यहाँ कैसे आ गये?"

सुरंग से बाहर आकर उसने माँ से पूछा तो पता चला कि पिता विदेश से लौट आये थे और उसे ही खोजने गये थे।

पिता का हत्यारा हरिदास दण्ड के भय से घर से भाग निकला और जंगलों में छिपता रहा, जहाँ हिंसक पशुओं का डर, भूख-प्यास आदि के असह्य दु:खों से वह परेशान हो गया। अन्त में दु:ख और ग्लानि से पीड़ित वह जंगल में ही मर गया।

अरे रे! व्यसनों की आग समय की हवा से बढ़ती जाती है। यह आग धन-सम्पत्ति, मान-मर्यादा, ज्ञान-ध्यान, सन्तोष-धैर्य, प्रेम-विश्वास सब कुछ लील जाती है। इन व्यसनों की आग में कुछ भी शेष नहीं रहता, बचता है तो सिर्फ दु:ख, अपमान, क्लेश और पीड़ा-पश्चात्ताप-ग्लानिरूपी राख। व्यसनों से प्रारंभ में क्षणिक भौतिक सुख मिलता है; किन्तु उनका अन्त अत्यन्त भयावह और दु:खद होता है।

परिणामों का फल

एक बैल था। वह प्रतिदिन गन्ने से भरी बैलगाड़ी लेकर जाता था। किसी साधु के दर्शन करने पर उसे अद्भुत आनन्द मिलता था। जिन मंदिर के सामने से निकलने पर जिनेन्द्र

भगवान को वह एकटक देखता था। कभी-कभी उसकी आँखों में आँसू आ जाते थे। जिनमंदिर के सामने पहुँच कर उसके कदम आगे ही नहीं बढ़ते थे। जब उसका मालिक किसान उसे आगे बढ़ने के लिए डण्डा मारता तो उसे लगता कि एक जिनेन्द्र देव ही शरणस्थली हैं। उसकी आँखों में दीनता दिखने लगती थी। वह विचार करता कि मैं कब इस दु:ख से मुक्त होऊँगा?

बैलगाड़ी का मालिक किसान भी बैल की प्रतिक्रिया देखकर आश्चर्यचकित होता था। एक बार बैल को जंगल के रास्ते में दिगम्बर मुनिराज के दर्शन हुए, सदा की भाँति वह मुनिराज को देखकर रुक गया और मुनिराज को टकटकी लगाकर देखने लगा, उसकी आँखों से लगातार आँसू बहने लगे। यह देखकर उसका मालिक मुनिराज के पास पहुँचा और हाथ जोड़कर विनयपूर्वक पूछा – "हे मुनिवर! यह मेरा बैल जिनमंदिर और आप जैसे मुनिराजों को देखकर रुक क्यों जाता है? और इसकी आँखों में आँसू क्यों गिरने लगते हैं? आप तो ज्ञानी हैं, कृपया मुझे इसका रहस्य समझायें।"

मुनिराज ने अत्यंत गम्भीर वाणी में कहा – "हे भव्य! यह बैल पूर्व भव में एक सेठ था। इसने वैराग्य धारण करके दिगम्बर मुनि दीक्षा ले ली। परन्तु जब भी यह गन्ने के पेड़ देखता था तो बहुत आनन्दित होता था। एक बार यह गन्ने के पेड़ देखकर आनन्दित हो रहा था और इसकी मृत्यु हो गई। दुर्भाग्यवश यह गन्ने की तीव्र आसक्ति के कारण आत्मध्यान भूल गया और आर्त परिणामों के फल में इसे गन्ने के खेत में ही बैल की पर्याय में ही जन्म लिया। लेकिन पूर्व भव के संस्कारों के कारण इसे जिनमंदिर और मुनिराजों के प्रति अत्यंत भक्ति परिणाम आता है।"

किसान ने पूछा – "हे मुनिवर! इस बैल के जीव का कल्याण कब होगा?"

मुनिवर बोले – "इस जीव को अपने परिणामों का प्रायश्चित्त हो रहा है। इसका शीघ्र ही कल्याण होगा।"

मुनिराज की मुद्रा देखते हुए बैल को जातिस्मरण हो गया और उसे अपने पूर्व भव के अपराध की याद आ गई। उसे सम्यग्दर्शन (सच्ची समझ अर्थात् पदार्थों का सच्चा ज्ञान) हो गया, उसने उसी दिन से आहार-पानी का त्याग कर दिया और निरन्तर पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते हुए उसकी मृत्यु हो गई। उसे देव पर्याय प्राप्त हुई।

बच्चो! अब आप समझ गये होंगे कि एक परिणाम की आसक्ति का कितना दु:खदायी फल मिलता है तो हमारे परिणामों को सुन्दर बनाने के लिए हमें देव-शास्त्र-गुरु और ज्ञानी व्यक्तियों की संगति में रहना चाहिए तभी हमारा भविष्य सुन्दर होगा।

चार चौकीदार

एक राजा था। उसका राज्य दूर-दूर तक फैला था। उसके राज्य में बहुत से उद्योग-धन्धे थे, पढ़े लिखे लोग थे। कहीं भी उपद्रव नहीं होते थे। प्रजा बहुत ही सुखी थी। उसके राज्य से लगा हुआ एक दूसरा छोटा-सा राज्य था। लेकिन उसमें आये दिन झगड़े होते थे।

लोग आपस में लड़ते थे प्रजा बहुत ही दुखी थी। राजा हैरान था।

एक दिन वह राजा दूसरे राजा के पास आया। बातचीत में उसने कहा - "मेरा छोटा-सा राज्य है, पर उसमें रोज उत्पात होते रहते हैं, प्रजा परेशान है। आपका राज्य इतना बड़ा है, फिर भी यहाँ पूर्ण शान्ति है। इसका कारण क्याहै?"

राजा हँसा और बोला - "आप ठीक कहते हैं। मेरे राज्य में बड़ा चैन है। उसका कारण यह है कि मैंने चार चौकीदार तैनात कर रखे हैं, जो हर घड़ी मेरी रक्षा करते हैं।"

दूसरे राजा ने कहा – "बस चार! मेरे यहाँ तो चौकीदारों की फौज है। आपका काम चार से कैसे चल जाता है?"

राजा ने कहा – "मेरे रक्षक दूसरी तरह के हैं।"

"कैसे?" दूसरे राजा ने उत्सुकता से पूछा।

पहले राजा ने उत्तर दिया – "हमारा पहला रक्षक है, सत्य। वह मुझे असत्य नहीं बोलने देता।"

"दूसरा?" – राजा ने कहा।

"दूसरा है, प्रेम। वह मुझे घृणा से बचाता है।"

और "तीसरा?" राजा बोला।

"तीसरा है, न्याय वह मुझे अन्याय नहीं करने देता।"

"और चौथा?"

राजा ने गम्भीर होकर कहा – "चौथा है, त्याग। यह स्वार्थी होने से मेरी रक्षा करता है।"

राजा की शंका का समाधान हो गया। जिस राजा के सत्य, प्रेम, न्याय और त्याग चौकीदार होते हैं, उसे कोई हैरानी नहीं हो सकती।

शिक्षा – जहाँ गुणों का वास होता है, वहाँ शांति होती ही है।

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. व्यसनों में कौन सी लतें सम्मिलित होती हैं? इन लतों में पड़ने का क्या परिणाम होता है?
2. परिणामों की आसक्ति का क्या फल मिलता है? लिखिए।

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. पूर्व के संस्कारों के कारण .... बैल को जिनमन्दिर के प्रति अत्यंत भक्ति का भाव आता था।
2. तीसरा है न्याय। वह मुझे .... नहीं करने देता।
3. .... की आग समय की हवा से बढ़ती जाती है।

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 3 – बुरी आदतें भय का कारण बनती हैं इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 4 – आपके कितने रक्षक हैं और कौन–कौन से? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस–पास

प्रश्न 5 – अच्छी आदतें गुण बन जाती हैं और बुरी आदतें व्यसन। ऐसे गुणों और अवगुणों की सूची बनाइये ?

रचना

प्रश्न 6 – चार चौकीदार कहानी के आधार पर एकांकी लिखिए।

यह भी जाने –

हम अपने जीवन में कई सारे लोगों से मिलते हैं। कुछ लोगों से मिलने के बाद हमारे मुख से स्वतः ही निकलता है कि वाह! कितना उत्तम चरित्र है। वहीं हम कभी–कभी कुछ ऐसे लोगों से भी दो–चार होते हैं जिनका व्यवहार एवं आचरण अनुचित होता है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस व्यक्ति का चरित्र ठीक नहीं है। चरित्र के मापदंड पर व्यक्ति के अच्छे या बुरे होने का पैमाना निर्भर करता है अर्थात् चरित्र एक महत्त्वपूर्ण गुण है। चरित्र व्यक्ति के अंतर्मन का आईना होता है। चरित्र केवल शब्द मात्र नहीं है। यह वृहत् अर्थ समेटे एक भाव है जो कई सारे गुणों के समावेश से अस्तित्व में आता है। चरित्र की महत्ता का इस श्लोक में सुंदरता पूर्वक बखान किया गया है –

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः!

अर्थात् चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता–जाता रहता है।धन के नष्ट होने पर भी चरित्र सुरक्षित रहता है, लेकिन चरित्र नष्ट होने पर सबकुछ नष्ट हो जाता है। चरित्रवान व्यक्ति हर जगह आदर और सम्मान का पात्र होता है। लेकिन उत्तम चरित्र पाना भी एक कला है। चरित्रवान बनने के लिए हमें अपने अंदर कई सारे गुणों का विकास करना पड़ता है और यह प्रक्रिया अनुशासन और दृढ़ संकल्प माँगती है।

12 सुभाषित : सत्संगति

चंदनं शीतलं लोके, चन्दनादपि चन्द्रमाः।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये, शीतला साधुसंगतिः।।

लोक में चन्दन शीतल है और चन्द्रमा चन्दन से भी अधिक शीतल है, परन्तु चन्द्रमा और चन्दन के मध्य में साधु संगति अधिक शीतल है।

उत्तमजनसंगत्या, पुमानिहाप्नोति गौरवं सततम्।
सुरभिप्रसूनमिलितं, तिलतैलं सुरभितां याति।।

यहाँ उत्तम जनों की संगति से मनुष्य निरन्तर गौरव को प्राप्त होता है, जैसे सुगन्धित फूल से मिला हुआ तिल तेल सुगंध को प्राप्त हो जाता है।

अपत्यं च कवित्वं च, सतां संगतिरेव च।
संसारश्रान्तजीवस्य, तिस्रो विश्रामभूमयः।।

संसार से थके हुए जीव के लिए पुत्र, कवित्व और सज्जनों की संगति यह तीन ही विश्राम की भूमियाँ हैं।

कल्पद्रुमः कल्पितमेव सूते, सा कामधुक् कामितमेव दोग्धि।
चिंतामणिश्चिन्तितमेव दत्ते, सतां हि संगः सकलं प्रसूते।।

कल्पवृक्ष संकल्पित वस्तु को ही देता है, वह प्रसिद्ध कामधेनु इच्छित वस्तु को ही पूर्ण करती है और चिन्तामणि चिन्तित वस्तु को ही देता है; परन्तु सत्संगति समस्त वस्तुओं को देती है।

सत्संगतेः फलं बुद्धिर्बुद्धेः फलमनाग्रहः।
अनाग्रहफलं शान्तिः शान्तिवृक्षफलं सुखम्।।

सत्संगति का फल बुद्धि है, बुद्धि का फल दुराग्रह का त्याग है, दुराग्रह त्याग का फल शान्ति है और शान्तिरूपी वृक्ष का फल सुख है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – लघूत्तरीय प्रश्न –

1. सत्संगति का क्या फल है?
2. चिंतामणि रत्न और सत्संगति में श्रेष्ठ कौन है और क्यों?

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. संसार से थके हुए जीव के लिए .... की संगति विश्राम की भूमियाँ हैं।
2. दुराग्रह त्याग का फल .... है।
3. .... गौरव को प्राप्त होता है।

पाठ्येतर प्रश्न

प्रश्न 3 – आप अपने लिए कैसी संगति चाहते हैं? इस विषय पर कक्षा में मित्रों से संवाद करके लिखो।

प्रश्न 4 – सोचिए कि यदि आप किसी बुरी संगति में फँस गए हैं, तो स्वयं को उसके प्रभाव से कैसे बचायेंगे? अपनी डायरी में नोट करो।

पाठ के आस-पास प्रश्न 5 – संगति के लाभ और बुरी संगति से हानियाँ लिखिए ?

रचना प्रश्न 6 – 'सच्चा मित्र औषधि होता है' विषय पर लेख तैयार कीजिए।

यह भी जाने –

सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का सा धैर्य और कोमलता होती है, ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक को करना चाहिए। – रामचंद्र शुक्ल

मित्रता का साधारण शाब्दिक अर्थ है – वह प्रिय व्यक्ति जो हमारे सुख-दुःख में हमारा साथ देता है। उसकी धारणा, उसका चिंतन हमारे हित के लिए होता है। यदि जीवन में दुख न हों, किसी प्रकार की विपत्तियों का सामना न करना पड़े और सभी सुख-साधन हों, तथापि मित्र का अभाव इनसे पूरा नहीं होता है। मैत्री के लिए दोनों व्यक्तियों का स्वभाव, गुण, आदत एक होना भी आवश्यक नहीं होता है। मित्र की सबसे बड़ी पहचान होती है कि वह हमारा शुभेच्छु, हितचिंतक होता है। मित्रता का अर्थ है – दो व्यक्तियों के बीच का वह पावन संबंध, जो स्वार्थ भावना से दूर होता है और जो सदैव एक-दूसरे के हित के लिए तत्पर रहते हैं। मित्र केवल सुख का ही साथी नहीं होता, वह केवल विपत्ति में सहायता करने वाला ही नहीं होता, मित्र केवल हमारे गुण-दोषों की ही परख करने वाला व्यक्ति नहीं होता है, अपितु वह जीवन में उत्साह और नई चेतना प्रदान करने वाला निष्पाप, निष्कपट व्यक्ति होता है, जो हृदय की गहराइयों से और भावना के पवित्र बंधन से हमारे साथ अटूट रूप से जुड़ा रहताहै।

प्यारे बच्चो !!

आप अपने प्यारे-प्यारे जन्मदिन पर -

- अपने निर्दोष परमात्मा/इष्टदेव का दर्शन/स्मरण करो।
- अपने दादा-दादी, नाना नानी, माता-पिता और अन्य बड़े जनों का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करो।
- विद्यालय में गुरुजनों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करो।
- अपने मित्रों के बीच फल, नारियल चटक, मिश्री वितरण करके शुभकामनाएँ प्राप्त करो।
- मन्दिर में दान करो।
- बालक-बालिकाओं को कॉपी-पेन आदि उपहार में देकर शुभकामनाएँ प्राप्त करो।

जन्मदिन के अवसर पर -

- मोमबत्ती जलाकर बुझाने का काम मत करो।
- बाजार में बने हुए केमिकल युक्त नुकसानदायक केक काटकर खाना-खिलाना मत करो।
- माता-पिता पर दबाव डालकर उपहार लेना, पैसा माँग कर मित्रों के बीच तन-मन-धन बिगाड़ने वाली पार्टी आदि मत करो।

आपके जन्मदिन के अवसर पर 'धरोहर' परिवार की मंगल शुभकामनाएँ हैं कि आप अपनी भारतीय संस्कृति रूप धरोहर को अच्छी तरह संभालें।

आपका जीवन मंगलमय होगा।

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

समर्पण

अनुशासन के सूत्र

- प्रत्येक कार्य समय पर करना चाहिए।
- प्रत्येक वस्तु को नियत स्थान पर रखना चाहिए।
- गुरुजनों को ज्ञात कराये बिना, कोई नवीन कार्य न करना चाहिए।
- भूल को सहजता से स्वीकार करना चाहिए।
- अपने लक्ष्य को प्रतिदिन दोहराना चाहिए।
- गुरुजनों के वचनों का आदर करते हुए अपने वचनों का निर्वाह करना चाहिए।

धरोहर